Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बांसा (अडूसा) बूटी

के गुण तथा उपयोग

लेखक—

पं० रामनरायण शर्मा वैद्य

मूल्य १।)

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार,
देहली ६

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं
Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बांसा (अडूसा) बूटी

ADHATODA VASIKA

के गुण तथा उपयोग

लेखक

वैद्यराज पं० रामनरायन शर्मा वैद्य

———

प्रकाशक और मिलने का पता—

देहाती पुस्तक भण्डार,

चावड़ी बाजार, देहली।

मूल्य १।) सवा रुपया

नोट-शहद और नमक के गुण तथा उपयोग भी छपकर तैयार हैं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रकाशक—
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाज़ार, देहली ।

टोटका चिकित्सा

प्राचीन काल में बड़े २ योगी, संन्यासी, तंत्रमंत्र औ
टोटकों से भयङ्कर तम रोगों को चुटकी बजाकर भगा देते थे
इस पुस्तक में देश के कोने कोने में जा जाकर ऐसे टोटक
संग्रहीत किये गये हैं, जो सहस्रों बार लोगों को लाभ पहुँच
चुके हैं । मूल्य ॥।)

Tiyagi Fine Art Press, Delhi.

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१. बांसा बूटी अड्सा	१
२. मस्तिष्क रोग	३
३. आँखों के रोग	५
४. कान के रोग	७
५. नाक के रोग	६
६. फेंफड़ों के रोग	१०
७. श्वाँस दमा	१३
८. हृदय रोग	१५
९. आमाशय के रोग	१६
१०. दांत और मसूड़े के रोग	१७
११. यकृत रोग	१८
१२. पाण्डु रोग (पीलिया)	१६
१३. राज रोग शोख रोग	१६
१४. वात रोग	२१
१५. कफ ज्वर	२२
१६. कफ पित्त ज्वर	२३
१७. कण्ठ कुब्ज सन्निपात	२४
१८. प्रलाप	२५
१९. हर प्रकार का सन्निपात	२६
२०. विषम ज्वर सन्निपात	२७
२१. रक्त दोष का बुखार	२८
२२. खाँसी बुखार	२६
२३. पित्त ज्वर	३०
२४. सन्निपात ज्वर	३०
२५. ठण्ड का ज्वर	३१
२६. बारी का बुखार	३१

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय ... पृष्ठ

२७. चौथय्या बुखार ३१
२८. पुराना ज्वर ३२
२९. स्वरभंग का रोग ३२
३०. गुरधरसी रोग ३५
३१. वात रक्त ३५
३२. रक्त पित्त ३९
३३. गुल्म रोग ४०
३४. मूत्र कृच्छ्र ४२
३५. पथरी का रोग ४५
३६. अण्ड कोष ४६
३७. व्रण शोथ ४७
३८. कुष्ट ५४
३९. शीत पित्त ५९
४०. अम्ल पित्त ६१
४१. विसर्प रोग ६३
४२. बसफूटक रोग ६४
४३. उपदंश ६६
४४. शीतला ६७
४५. प्रदर ७०
४६. योनि रोग ७२
४७. गन्ध पूतना ७३
४८. प्रमेह ७५
४९. (अडूसा) बांसा घृत ७६
५०. मस्से बवासीर ७६
५१. पलिय [पाण्डु रोग] ७७
५२. सुजाक ७७
५३. तपेदिक ७८
५४. पित्त के रोग ८०
५५. कमल बाव ८७
५६. काढ़े ८७
५७. पुट पाक रस ८८
५८. फांट ८९
५९. कलक ८९

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बांसा बूटी

ADHATODA VASIKA

हिन्दी में बांसा पिया बांसा उर्दू में अडूसा पंजाबी में भेंकड़ या बसूटी संस्कृत में वासिका और अंगरेजी में MALABARNUT मालाबार नट या ADHATODA VASIKA अडाटूडा वासिका कहते हैं।

यह बूटी प्रायः हर जगह पाई जाती है। पहाड़ी पर तो यह बूटी बहुत ही ज्यादा होती है, किन्तु भारत के लगभग हर जङ्गल, मैदान, खेत तथा हर जगह मिलती है।

इस बूटी का पौधा लगभग पाँच-छः फुट तक का ऊँचा होता है जिसके पत्ते लगभग पाँच इंच तक लम्बे और दो तीन इंच तक चौड़े हरे रङ्ग के हुवा करते हैं। (१) सफेद (२) नीले (३) लाल (४) पीले। इन फूलों के रंगों के अनुसार ही यह बूटी चार प्रकार की कहलाती है, किन्तु लाभदायक बूटी चारों ही बराबर हैं।

फूलों की शकल शेर के खुले मुँह जैसी हुआ करती है। इसके पत्तों और छाल का स्वाद कड़ुवा हुआ करता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है और इसके पत्तों की जड़ में नन्हे नन्हे और नुकीले कांटे हुवा करते हैं।

वांसा मनुष्य शरीर के लिये अत्यन्त लाभदायक बूटी है जिसके लाभदायक होनेसे ही प्रत्येक वैद्य, हकीम, डाक्टर आदि अत्यन्त लाभ उठा रहे हैं। आयुर्वैदिक के ग्रन्थों में इस बूटी के लिए यहाँ तक लिखा हुवा है कि जिस मुल्क में जिस जगह भी यह बूटी पैदा होती या ताजा मिलती है वहां पर खांसी, श्वांस, दमा, सिल, तपेदिक आदि के रोग पैदा ही नहीं होने चाहियें, अगर पैदा हो भी जांय तो इस बूटी के मिलते हुये खांसी, श्वांस, दमा, तपेदिक रक्त-स्राव आदि के रोगियों को घबराने या फिकर करने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है, केवल इस बूटी द्वारा ही जल्दी से जल्दी यह रोग नाश हो जाते हैं। इस बूटी के पत्ते फूल जड़ छाल व फल आदि सब पंचांग दवा में काम आते हैं और लाभदायक होते हैं।

VASICINE

वैसीसैन नामी जोहर जो अलकोहल और खारी पानी में तत्काल घुल मिल जाया करता है वह इसी बूटी में से निकाला जाता है। इस बूटी में से एक रङ्गदार मादा तथा खाँड और एक प्रकार का गोंद और नमक भी निकलता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ADHATODIC ACID

एक प्रकार का तेजाबी मादा जिसको अडाटोडिक एसिड कहते हैं वह भी इसी बूटी में से प्राप्त किया जाता है।

मस्तक के रोग और बांसा

शिर का दर्द

यह एक प्रसिद्ध बीमारी है किन्तु इसके पैदा होने के कारण भाँति-भाँति के होते हैं किन्तु ज्यादा करके अजीर्ण बदहजमी कब्ज के तथा पेट की खराबी से ही यह रोग ज्यादा हो जाया करता है। प्रमेह रोग में धात के कमजोर हो जाने से, ज्यादा दिमाग़ी काम करने से, सर पर चोट लग जाने से आदि आदि कारणों से सर का दर्द नजला जुकाम पीनस यानी मस्तक में कीड़े पड़ जाना आदि रोग पैदा हो जाया करते हैं।

(१) बांसा के ताजा पत्तों का रस ६ माशा में ६ माशा शहद मिलाकर पीने से सर का दर्द तत्काल बन्द हो जाता है। अगर दर्द बाकी रह जाय तो दो चार दिन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तक इसी प्रकार पीने से सर का दर्द और मस्तिष्क की दुर्बलता दूर हो जाती है।

(२) बांसा के हरे पत्तों या फूलों की बारीक चटनी सी बनाकर दर्द की जगह गाढ़ा गाढ़ा लेपन करदें। लेपन के सूखते-सूखते दर्द दूर हो जायगा, अगर दर्द फिर दोबारा हो या बाकी रह जाय तो इसी प्रकार दो चार बार के लेपन करने से बिल्कुल समूल नष्ट हो जायगा।

(३) बांसा की पत्ती के रस में थोड़ी प्याज खूब बारीक पीसकर पैर के तलवों में लेप करदें हर प्रकार का सर का दर्द दूर हो जाता है।

४ मस्तक के कीड़े

बांसे की पत्ती के रस में जरा-सा मूली खार बारीक पीसकर मिलादें और उसकी तीन चार बूंद रोगी की नाक में टपकाकर ऊपर को सुड़कवायें तथा खिंचवायें। मस्तिष्क के कीड़े तत्काल नाक द्वारा निकल कर साफ हो जायेंगे।

५ सन्निपात

बांसे के पत्तों के एक सेर रस में आधा पाव तिल का तेल डालकर आग पर रखकर धीमी धीमी आग से

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पकावें जब पकते-पकते सब रस जल जाय केवल तेल ही तेल बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़े से छानकर फिर इस तेल में नौशादर ६ माशा कपूर देसी तीन माशा खूब बारीक पीसकर मिलादें और शीशी में बन्द करके रखलें। इस तेल की तीन चार बूंदें सन्नि-पात के रोगी की नाक में टपकाने से बेहोशी तत्काल दूर हो जाती है।

इस तेल की मालिश से तपेदिक मिटेगा हिस्टीरिया और पागलपन आदि को लाभ हो जाता है।

आँखों के रोग

आँखों के रोग तो इतने हैं कि अगर सब का हाल लिखा जाय तो एक अलग पुस्तक तय्यार हो। जैसे आँखों का उठना, आँखों का दुखना, आँखों की सन्जनी, मोतियाबिन्द, नजर की कमजोरी, आँख का फोला, जाला, रतोन्धा, दिनोंधा, आँख का ढलका, आँख की पलकी या किनारों का गलना तथा घाव आदि अनेक रोग होते हैं किन्तु यहाँ उन ही रोगों का जिकर किया जाता है जिन रोगों में बांसा लाभदायक है।

६ आँख का दुखना

बाँसा के हरे पत्ते खूब बारीक पीसकर चटनीसी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बनाकर दुखती आँखों पर उसका गाढ़ा गाढ़ा लेपन करदे तथा उसकी टिकिया सी बनाकर आँखों पर बाँध दे आँखों का दर्द जलन रड़का आदि तो तत्काल ही दूर हो जायेगा और दो चार बार के लगाने से हर शिकायत की दुखती आँखों को बिल्कुल आराम हो जाता है। किंतु यह याद रहे कि चटनी पीसते समय उसमें पानी बिल्कुल न डाला जावे, अगर जरूरत पड़े तो बाँसा की पत्ती का पानी ही डाला जाय।

७ अकसीर आँख

बाँसा का पौधा जड़ समेत यानी फल फूल पत्ते डाली और जड़ पंचाँग लेकर उसकी छाया में रखकर सुखा लें जब अच्छी प्रकार सूख जाय तो उसमें आग लगा कर जला कर उसकी राख बना लें जब राख ठण्डी हो जाय तो इस राख को किसी मिट्टी के बतन में डाल कर राख से आठ गुना पानी उसमें डालकर भिगोकर रखदें और एक सप्ताह तक भीगा रहने दें। किन्तु प्रति दिन दिन में एक दो बार इस राख को अच्छी तरह घोल जरूर दिया करें, एक सप्ताह के पश्चात् इस राख के ऊपर का निथरा हुआ पानी किसी दूसरे बरतन में निथार लें और राख को फेंक दें और इस निथरे हुये पानी को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

साफ कढ़ाई में डालकर आग पर रखदें और धीमी धीमी आग से पकावें जब पकते पकते सारा पानी जल जाय तो आग से नीचे उतार लें और कढ़ाई के पेंदे में जो सफेद सफेद खार जमा हुवा हो उसको खुरच कर निकाल ले और बारीक पीसकर शीशी में भर कर मजबूत डाट लगा कर रख दें बस यह दवा अकसीर आँख तयार है जिसको बांसा खार या बांसे का खार कहते हैं यह मनुष्य शरीर की लगभग हर प्रकार की बीमारियों में अलग अलग अनुपान के साथ सेवन करने से अत्यन्त लाभदायक है। इस खार को बारीक पीस कर रेशमी कपड़े में छान कर सुरमा सा लगाया करें, आँख का फोला, जाला, रतोन्धा, दिनोन्धा, ढरका आदि सब रोग दूर हो जाते हैं यहाँ तक कि नये मोतियाबिन्द को भी दूर कर देता है इसके सेवन से आँखों की रोशनी बढ़ जाती है।

कान के रोग

८ कान का दर्द

बांसा की पत्ती का रस जरा गरम करके कान में डालने से कानों का दर्द तत्काल दूर हो जाता है अगर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पहली बार में दूर न हो तो दूसरी बार में तो अवश्य ही बन्द हो जाता है।

९ कान का बहना

बांसा की पत्ती के रस में बराबर का शहद मिलाकर उसमें पुरानी रुई की बत्ती भिगोकर कानों के अन्दर सुबह शाम रखें, सुबह की रखी हुई बत्ती को शाम के समय निकाल कर और शाम के समय रखी हुई बत्ती सुबह को निकालकर फिर नई बत्ती रखें पहले दिन ही कान का बहना बन्द हो जायेगा और तीन चार दिन तक इसी प्रकार रखने से तो अवश्य ही बन्द हो जाता है।

१० कम सुनना या बहरापन

बांसे की पत्तियों के पाव भर रस में एक छटाँक तिल का तेल डालकर आग पर रखकर धीमी धीमी आग से पकावें। जब पकते पकते सब रस जल जाय और तेल ही तेल बाकी रह जाय तो आग से उतारकर कपड़े में छानलें और इस में १ माशा कपूर देसी खूब बारीक पीसकर मिलादें इस तेल की चार चार बूँदें जरा गरम करके सुबह शाम कानों में डालने से कानों का भारापन, कानों में भनभन या झनझन की सी आवाज का आना दूर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

होकर कम सुनना या बिल्कुल न सुनना यानी बहरापन का रोग दूर होकर सुनाई देने लग जाता है।

नाक के रोग

११ नकसीर

बांसे के पत्तों के रस में बराबर का नींबू का रस डालकर अच्छी तरह मिला लें और इसमें से पाँच चार बूँद नकसीर के रोगी की नाक में टपकादें और उससे ऊपर को सुड़कवायें यानी ऊपर को खिंचवायें। नकसीरका बहता हुवा खून तत्काल बन्द हो जायगा किन्तु इसी प्रकार थोड़ी थोड़ी देर बाद तीन चार बार या जब तक थोड़ा बहुत खून आता रहे डालते रहना चाहिये तीन चार बार के टपकाने से खून का बहना बिल्कुल बन्द हो जाता है।

१२ नकसीर के लिए

खार बांसा १ माशा एक तोला नींबू के रस में मिला कर नकसीर के रोगी की नाक में टपकाने से वही काम देगा जो नं० ११ काम करता है नकसीर के खून को बन्द करने के लिए जादू तुल्य दवा है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१३ नकसीर के लिए

कहरवा शमई जो लाल रङ्ग का गोंद सा हुवा करता है और पन्सारियों के यहाँ मिलता है वह एक तोला लेकर खरल में डालकर उसको खूब बारीक पीसकर फिर इसमें बांसा के पत्तों का रस डालकर खूब रगड़ें जब रगड़ते रगड़ते उसमें पाव सेर बांसा के पत्तों का रस खुश्क हो जाय तो फिर बारीक पीसकर सुरमा जैसा बना कर रखलें। मात्रा इस दवा की केवल १ माशा ताजा पानी के साथ खाने से मनुष्य-शरीर में नाक मुँह पेशाब पाखाना आदि किसी राह से भी खून का दरिया बह रहा हो इस दवा की पहली मात्रा से ही खून के बहाव की ज्यादती कम होकर दूसरी तथा तीसरी मात्रा के देने से तो बिल्कुल खून का गिरना बन्द हो जाता है निहायत लाभदायक जादू असर दवा है।

फेफड़े के रोग

१४ खाँसी के लिए

बांसा के पत्तों के एक तोला रस में ६ माशा शहद मिलाकर सुबह शाम चटावें। पहली मात्रा से ही खाँसी की धों-धों बन्द हो जाती है और दो चार दिन में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सूखी तथा तर हर प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है।

१५ खाँसी

बांसा के पत्ते आवश्यकतानुसार लेकर उन को गीले कपड़े में लपेटकर उसके ऊपर गीली मिट्टी का लेप करदे और छाया में रखकर सुखा लें जब मिट्टी जरा सूख जाय तो उसको आग में तथा गरम गरम भूभल में दबादें जब मिट्टी पककर लाल हो जाय तो आग से या भूभल से निकाल कर ठण्डा करके तोड़कर पत्ते निकाल लें फिर उन पत्तों को निचोड़ कर उनका रस निकाल लें और किसी साफ शीशी में डालकर रखें। यह रस लगभग ६-६ माशा सुबह शाम ६-६ माशा शहद मिलाकर पिलायें सूखी तथा तर हर प्रकार की खाँसी गिनती के दिनों में दूर हो जाती है, खाँसी के लिए बड़ी लाभदायक दवा है।

१६ खाँसी के लिए

बांसा पत्ती का रस १ सेर लेकर इसमें मिश्री सफेद पाव सेर पीपली १ छटाँक गाय का घी पाँच छटाँक सब चीजों को मिलाकर आग पर रखकर पकावें जब पकते पकते सब चीजें शहद जैसी गाढ़ी हो जाँय तो आग से नीचे उतार कर ठण्डा करलें। जब ठण्डा हो जाय तो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसमें पाव सेर शहद असली और मिला दें खाँसी की नायाब दवा तयार है। मात्रा इस दवा की ६-६ माशा से १-१ तोला तक सुबह शाम खाने से सूखी तथा तर हर प्रकार की खाँसी जड़ से दूर हो जाती है। कफ़ के साथ खून का आना तपेदिक और पसलियों का दर्द भी दूर हो जाता है। पुरानी से पुरानी खाँसी की, तपेदिक की खाँसी को दूर कर देता है।

१७ खाँसी दमा के लिए

बांसा खार एक माशा सुबह और एक माशा शाम को थोड़े ताजा पानी में घोलकर पिलाने से सूखी तर तथा काली खाँसी तक गिनती के दिनों में जड़ से दूर हो जाती है तीन साल तक का श्वाँस दमा भी दूर हो जाता है।

१८ खाँसी के लिए

बाँसा के पत्ते और जड़ सम भाग लेकर उनका काढ़ा बनाकर उसमें छोटी पीपल जरा सी बारीक पीस-कर मिला कर कपड़छन करके पिलाने से सूखी तथा तर हर प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है।

१९ खाँसी के लिए

बाँसा के पत्ते तथा जड़ सम भाग लेकर उसका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काढ़ा बनालें, फिर उस काढ़े में सोंठ और भारंगी १-१ माशा मिला कर पीने से सूखी तथा तर हर प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है। दमा श्वाँस के लिए भी लाभदायक है।

२० खाँसी के लिए

बांसा के पत्ते तथा जड़ी का काढ़ा बना कर उसमें केवल थोड़ी सी सोंठ ही मिला कर पीने से सूखी तथा तर हर प्रकार की खाँसी को दो चार दिन में ही आराम हो जाता है और गिनती के दिनों में पुरानी खांसी भी दूर हो जाती है।

२१ खाँसी दमा के लिए

बाँसा की जड़ और छोटी कटेली की जड़ दोनों सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनालें इस काढ़े में १-१ माशा बाँसा खार सुबह शाम घोल घोलकर पिलाने से हर प्रकार की खाँसी को पहले दिन ही आराम हो जाता है और एक सप्ताह में पुरानी से पुरानी खाँसी सूखी व तर तथा नया दमा श्वास भी दूर हो जाता है।

२२ श्वास दमा

बाँसा के पत्ते हल्दी सोंठ छोटी पीपल गिलोय भारंगी छोटी कटेली की जड़ और काली मिरच सब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चीजें सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनालें इसी प्रकार काढ़ा बनाकर सुबह शाम पीने से हर प्रकार का श्वास दमा कुछ ही दिनों में जड़ से दूर हो जाता है।

२३ श्वास दमा के लिए

बाँसा के पत्तों को छाया में रखकर सुखा लें इन सूखे पत्तों को कूट कर तम्बाकू की तरह चिलम में रख कर पीने से श्वाँस दमा का दौरा तो तत्काल ही बन्द हो जाता है और सुबह शाम इसी प्रकार प्रतिदिन पीते रहने से हर प्रकार का श्वाँस दमा कुछ ही दिनों में जड़ से दूर हो जाता है।

२४ श्वास दमा के लिए

बाँसा के ताजा पत्तों को लपेट कर सिगरेट की तरह के सिगार जैसे बना कर छाया में रखकर सुखालें और श्वास दमा के रोगी को जिस समय दमा का दौरा हो सिगरेट की तरह पिलावें दमे का दौरा तत्काल बन्द हो जायगा इसी प्रकार प्रतिदिन सुबह शाम सिगरेट की तरह पिलाने से हर प्रकार का श्वास दमा कुछ ही दिनों में जड़ से दूर हो जाता है।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२५ दिल के रोगों के लिए

बाँसा के पत्ते और पीपल के पत्ते दोनों सम भाग लेकर सोलह गुना पानी में भिगो कर रखदें यानी अगर दोनों पत्तों का भार एक सेर हो तो उसमें सोलह सेर पानी डालकर भिगोदें और चौबीस घण्टे तक भीगा रहने दें। चौबीस घण्टे के बाद भबके में डालकर आग पर रख कर जिस प्रकार और दवाइयों का अरक खींचा जाता है उसी प्रकार इसका अरक खीच लें और सफेद रङ्ग की साफ़ बोतलों में भरकर रखलें। इस अरक में से एक छटाँक अरक लेकर रात के समय किसी कलईदार या चाँदी के बरतन में डालकर उसमें आधा छटाँक किश-मिश हरी तिनके आदि से साफ करके डालदें और ऐसी जगह पर रखें कि जहाँ रात भर उस पर चाँद की रोशनी पड़ती रहे फिर सुबह के समय टट्टी पेशाब आदि से निश्चित होकर किसी सींक सलाई सुई आदि से एक-एक किशमिश निकाल-निकाल कर चबा-चबा कर खावेंजब सब किशमिश खा चुकें तब वह बचा हुवा अरक भी ऊपर से पी लें इसी प्रकार तीन चार दिन तक प्रतिदिन लगातार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सेवन करने से दिल का धड़कना तथा दिल की दुर्बलता दूर होकर दिल की कमजोरी तथा हर प्रकार की खराबी दूर हो जाती है कैसी साधारण दवा है किन्तु लाभ में सच्चे मोती याकूत आदि बहुमूल्य दवाइयों से भी बढ़कर लाभदायक और सहल तय्यार होने वाली तथा स्वादिष्ट दवा है।

२६ आमाशय के लिए

बांसा खार मूली खार और आक का खार तीनों सम भाग मिलाकर बारीक पीसकर रखें। मात्रा इस दवा की केवल दो-दो रत्ती सुबह शाम जिह्वा पर रखकर ऊपर से थोड़ा गरम पानी पीलें। इसके सेवन से खाया पिया तत्काल हजम हो जाता है, पेट का दर्द दूर हो जाता है अजीरन बदहज़मी खट्टी डकारों का आना कब्ज़ रहना भूख का न लगना खुराक का अच्छी तरह हजम न होना आदि हाजमे आमाशय की सब खराबियाँ कुछ ही दिनों में दूर होकर भूख खुलकर लगने लगती है, भोजन चार घण्टे के अन्दर अन्दर हजम हो जाता है कब्ज़ दूर होकर पाखाना खुलकर साफ़ आता है शरीर में शुद्ध खून की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पैदावार बढ़कर चुस्ती फुर्ती तथा पुष्टाई पैदा करता है।

दाँत और मसूड़ों के रोग

२७ दाँत रोग के लिए (पायरिया)

वांसा के पत्तों के रस में सम भाग शहद मिलाकर मसूड़ों पर मलने से दाँत तथा मसूड़ों से खून पीप का निकलना पायरिया का रोग दूर होकर मसूड़े मजबूत हो जाते तथा हिलते दाँत भी जम जाते हैं।

२८ दाँत मसूड़ों के लिए

वांसा की दातुन करने से दांत तथा मसूड़ों के हर प्रकार के रोग दूर हो जाते तथा दूर रहते हैं वांसा की दातुन मसूड़ों को नीरोग और मजबूत वनाती है इससे हिलते दाँत भी जम जाते हैं और दाँत तथा मसूड़े हर प्रकार के रोगों से बचे रहते हैं।

२९ दाँतों का मञ्जन

वांसा के पत्ते छाया में रखकर सुखाये हुये एक छटाँक फटकड़ी सफेद भूनी हुई दमउलखावीन कत्था सफेद माजू हरे किन्तु जलाकर और काली मिरच सव एक-एक तोला छोटी इलायची के दाने ६ माशा नीला थोथा भूना हुवा एक माशा सबको वारीक पीस कूटकर कपड़छन करके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मंजन बनालें इस मंजन को सुबह शाम दाँतों पर मलने से दाँत सफेद हो जाते हैं दाँतों की जड़ों तक का मैल साफ हो जाता है इसलिए दाँत तथा मसूड़े हर प्रकार के रोगों से बचे रहते हैं।

यकृत के रोग

३० पलिया के लिए

बांसा के पत्ते सात नग पीपल के पत्ते लहसोड़े के पत्ते पाँच-पाँच नग तीनों को ठण्डाई की तरह रगड़ घोट कर आधा सेर मूली के पत्तों के पानी में मिलाकर उसमें जरा सा नमक मिलाकर कपड़े से छानकर पलिया के रोगी को पिलादें इस दवा के पीते ही रोगी को शान्ति हो जायगी और रोगी खुद कह देगा कि हाँ मुझे इस दवा के पीने से लाभ प्रतीत हो रहा है इस दवा से दस्त भी आते हैं और भूक खुलकर लगती है इसी प्रकार इस दवा को लगातार एक सप्ताह तक प्रतिदिन पीने से एक सप्ताह के अन्दर पलिया का निशान तक नहीं रहता है।

३१ यकृत के दर्द और सूजन के लिए

बांसा की जड़ छाया में रखकर सुखा लें जब अच्छी तरह सूख जाय तो खूब बारीक कूट पीसकर कपड़-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छन करके रखलें और इसमें से थोड़ी सी दवा बांसा के पत्तों के रसमें घोटकर दर्द तथा सूजन की जगह पर गाढ़ा गाढ़ा लेपन करदे। लेपन के सूखते सूखते यकृत का दर्द दूर हो जाता है तथा दो तीन बार के लगाने से यकृत की सूजन भी दूर हो जाती है यकृत दर्द तथा सूजन का रोग बड़ी कठिनाई से दूर हुवा करते हैं किन्तु इस दवा के दो चार बार के लेपन करने से आराम हो जाता है कैसी सरल दवा है सेवन करके लाभ उठावें।

३२ पलिया के लिए

बांसा के पत्ते गिलोय नीम की छाल तिरफला चिग-यता और कुटकी सब सम भाग लेकर सबको अधकुटा करके दो दरम का काढ़ा बनालें फिर उसमें शहद मिला-कर दस दिन तक लगातार प्रतिदिन पीने से पलिया काला तथा पीला हर प्रकार का दस दिन में ही निशान तक बाकी नहीं रहता है।

राजरोग और शोख रोग

राजरोग की बीमारी पाँच प्रकार की हुवा करती है एक वादी दूसरी सफरादी यानी पित्त की तीसरी कफ की चौथी सन्निपात यानी तीनों दोषों की पाँचवीं छाती में चोट लग जाने से।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शोख रोग ६ प्रकार को हुवा करता है (एक) स्त्री के साथ ज्यादा प्रसङ्ग तथा भोग-विलास करने से (दूसरा) ज्यादा रंज फिक्र करने से (तीसरा) गहरे घाव तथा छाती में चोट लग जाने से (चौथा) ज्यादा पैदल चलने से (पाँचवाँ) ज्यादा मेहनत करने से और (छठा) बुढ़ापे से ।

राजरोग

पेशाबखाना और रयाह के रोकने से धातु के कमजोर तथा पतला हो जाने से भूक से ज्यादा खाने ताकत से ज्यादा मेहनत करने भरे पेट पर खाने से रस की बहने वाली नसें रुककर धात दुर्बल पतली हो जाया करती है जिससे फिर सातों धातें कमजोर होकर मनुष्य प्रतिदिन सूखता चला जाता है शरीर में दर्द रहने लगता है खाँसी के रास्ते कफ निकलने लगता है तालू सूख जाते हैं आमाशय कमजोर होकर कै आने लगती है खुन्नाक खाँसी नींद की ज्यादती बढ़ जाया करती है आँखों का रङ्ग सफेद हो जाता है पसली और कन्धों में दर्द रहने लग जाया करता है हाथ पावों में जलन शरीर में बुखार आदि हो तो यह सब राजरोग कहलाता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३३ राजरोग के लिए

बांसा के पत्तों का रस और कटेली का रस एक-एक तोला लेकर मिलाकर उसमें शहद एक तोला और छोटी पीपल एक तोला बारीक कूट पीसकर मिलाकर प्रीतदिन खाने से राजरोग की बीमारी दूर हो जाती है किन्तु कुछ दिन तक लगातार खाना चाहिये।

३४ वातरोग के लिए

बांसा के पत्ते अरण्ड की जड़ धमासा कचूर दारू हल्दी खरेटी नागरमोथा जन्जबोल अतीस पोस्त हलीला गोखरू सहजना चब छोटी बड़ी कटेली सब एक-एक तोला रासना तीन तोला सब दवाइयों को अधकुटा करके तीन पाव पानी में आग पर रखकर पकावें जब पानी जलते जलते पावभर के लगभग रह जाय तो आग से नीचे उतार कर मसलकर छानकर पिलादें रस काढ़े को प्रतिदिन लगातार पिलाने से पक्षाघात लकवा शरीर का काँपना कुबड़ापन लङ्गड़ापन शरीर की बिगड़ी हुई हर प्रकार की वात पाँव का दर्द ग्रधरसों का रोग वात रक्त बवासीर प्रमेह स्त्रियों का बांझपन आदि कुछ ही दिनों के सेवन से दूर हो जाते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ज्वर

३५ कफ ज्वर के लिए

वांसा के पत्ते नीम की छाल सोंठ गिलोय पोहकर मूल कुटकी कचूर कायफल पीपल और सतावर सब दवाइयाँ ६-६ माशा लेकर इनका काढ़ा बनाकर पिलाने से कफ ज्वर दूर होजाता है।

३६ कफ ज्वर

वांसे के पत्ते छोटी कटेली गिलोय सोंठ और पोहकर मूल सब ६-६ माशा लेकर इनका काढ़ा बनाकर पिलाने से कफ ज्वर दूर हो जाता है।

३७ कफ ज्वर खांसी दमा

वांसा के पत्ते छोटी कटेली छोटी पीपल काकड़ा सींगी और गिलोय ६-६ माशा लेकर इन सब का काढ़ा बनाकर पिलाने से कफज्वर दमा खांसी तथा बदहजमी आदि दूर हो जाते हैं।

३८ कफ रोग के लिए

वांसे के पत्ते एक तोला का काढ़ा बनाकर पिलाने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

से कफ ज्वर तथा कफ की ख़राबी से पैदा हुई सब ख़राबियाँ बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।

३६ कफ रोग

बांसा के पत्ते तथा सोंठ दोनों ६-६ माशा लेकर इनका काढ़ा बनाकर पिलाने से कुछ ही दिनों में कफ की खराबी से पैदा हुईं सब खराबियाँ दूर हो जाती हैं किन्तु दवा लगातार प्रतिदिन पिलानी चाहिये।

कफ ज्वर की पहिचान

शरीर का भारीपन रहना, रोंगटों का खड़ा होना, पेशाब और नाखूनों का रङ्ग सफेद होना नींद का ज्यादा आना, शरीर का ठण्डा रहना, मुँह का स्वाद मीठा रहना, बुखार का हल्का रहना, सुस्ती, दमा, खाँसी, खन्नाक आदि के रोग हों तो यह कफ ज्वर की पहचान है।

कफ और पित्त का बुखार

मुंह और जबान का कफ से भरा रहना गफलत सी रहना खाँसी प्यास की ज्यादती शरीर में सीजिश जलन होना हर समय सरदी सी मालूम देना और दर्द रहना छाती में दर्द रहना चक्कर आना भूक का न लगना शरीर का जकड़ा हुवा सा रहना पेशाब का रंग सफेद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कि॰ (ललाईयुक्त चिकना होना और पाखाने का रङ्ग भी सफेद किन्तु ललाईयुक्त होना आँखों का रङ्ग मेंढक के रंग जैसा होना मुँह का स्वाद मीठा या कड़ुवा रहना जबान का रंग ललाईयुक्त सफेद होना जिस रोगी का यह लक्षण पावे उसको कफ पित्त का बुखार समझना चाहिये ।

४० कफ पित्त के ज्वर के लिए

बांसा का पंचांग गिलोय छोटी तथा बड़ी कटेली कपूर दारू हल्दी पीपल छोटी पटोल पत्र नीम की छाल और चिरायता ६-६ माशा इन सबका काढ़ा बनाकर सुबह तथा शाम को प्रतिदिन पिलाने से कफ तथा पित्त का बुखार दूर हो जाता है ।

कण्ठ कुबज सन्निपात

सर में दर्द तथा जलन का होना डाढ़ में दर्द रहना शरीर का ज्यादा गरम रहना गला रूखा तथा गले का पकना बेहोशी का होना शरीर में दर्द रहना प्रलाप बकना आदि रोगों का बुखार के साथ होना कण्ठ कुबज सन्निपात कहलाता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४१ कण्ठ कुब्ज सन्निपात

वांसा की जड़ कचूर चिरायता पोस्त हलीला भारंगी दारू हल्दी पोहकर मूल नागरमोथा कूड़ा की छाल इन्द्र जौ कुटकी काली मिरच सब दवाइयाँ ६-६ माशा लेकर उनका काढ़ा बनाकर सुबह तथा शाम को दोनों समय पिलाने से कण्ठ कुब्ज सन्निपात का रोग दूर हो जाता है।

प्रलाप सन्निपात

शरीर काँपे और बहुत गरम रहे प्रलाप बके और शरीर में जलन हो बुखार का जार ज्यादा हो बेहोशी ज्यादा हो जाये शरीर के सब भागों में दर्द है यह प्रलाप सन्निपात कहलाता है।

४२ प्रलाप सन्निपात

वांसा नागरमोथा नेत्रबाला शाल पटनी परष्ट पटनी छोटी तथा बड़ी कटेली बेलगिरी अटलू खम्भार पाठ सोंठ पित पापड़ा चन्दन सफेद सब समभाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर सुबह तथा शाम को दोनों समय पिलाने से प्रलाप सन्निपात को एक सप्ताह में बिल्कुल आराम हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

झोक सन्निपात

जिस रोगी को बुखार तथा खाँसी भी हो जबान खड़खड़ा जाय और जबान में काँटे पड़ें गूंगा तथा बहरा हो जाय इसको झोक सन्निपात कहते हैं इस रोग को बड़ी कठिनता से आराम आया करता है किन्तु नीचे लिखी दवा इस रोग को जल्दी और समूल नष्ट कर देती है।

४३ झोक सन्निपात

बांसो का पंचांग बच खुरासानी छोटी कटेली जवासा रासना गिलोय नागरमोथा सोंठ कुटकी काकड़ा सिंघी पोहकरमूल ब्राह्मी भारंगी नीम की छाल कचूर सब दवाइयाँ सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर सुबह तथा शाम को दोनों समय लगातार पिलाने से एक सप्ताह में झोक सन्निपात बिल्कुल दूर हो जाना है।

प्रभन्यास सन्निपात

नींद का न आना साँस का जल्दी जल्दी चलना शरीर का काँपना घों-घों बोलना शरीर का लकड़ी जैसा हो जाना प्रभन्यास सन्निपात कहलाता है जिस रोगी को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऊपर लिखी सब खराबियाँ हों उस का बचना कठिन और ला इलाज समझना चाहिये ।

४४ प्रभन्यास सन्निपात

बांसा का पंचांग भारंगी रासना परवल के पत्ते देवदुवार हल्दी सोंठ काली मिरच छोटी पीपल इन्द्रायन की जड़ नीम की छाल नेत्रबाला कटकी बच पाट सोना पा दार हल्दी छोटी कटेली गिलोय निसीत झाऊ की जड़ पोहकरमूल त्रिफला नागरमोथा जवासा इन्द्र जौ और कचूर यह सब दवाइयां समभाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर सुबह शाम लगातार पिलाने से पन्द्रह दिन में प्रभन्यास सन्निपात दूर हो जाता है ।

विषम ज्वर

जिस मनुष्य को बुखार आने के पश्चात् किसी प्रकार की बदपरहेजी से रस धात को छोड़कर खून में मिलकर पित्त तथा कफ को खराब करके विषम ज्वर पैदा कर दिया करता है या जिस रोगी को बुखार आकर सरदी और जलन हो जाय प्यास तथा जलन बहुत बढ़ जाय इसको विषम ज्वर कहते हैं जो चार प्रकार का हुवा करता है एक वह जो प्रतिदिन हो जाया करता है दूसरा वह जो एक दिन छोड़कर आया करता है तीसरा वह जो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हर तीसरे दिन बारी के साथ आया करता है और चौथा वह जो हर चौथे दिन आया करता है यह बुखार होता तो बहुत प्रकार का है किन्तु ज्यादा करके यह चार प्रकार का बुखार ज्यादा प्रसिद्ध और आया करता है इस बुखार वाले को लौंग तथा मोठ की दाल का पानी पिलाना लाभदायक होता है ठण्डा पानी पिलाना हानिकारक होता है।

४५ विषम ज्वर

बांसा का पन्चांग चिरायता नीम की छाल कुटकी गिलोय पोस्त हलीला नागरमोथा धनिया कटेली सफेद भटकटिया कांकड़ासिंगी सोंठ पित पापड़ा शीतल मिरच के फूल परवल के पत्ते छोटी पीपल कचूर इन सब दवाइयों को सम भाग लेकर खूब बारीक पीसकर कपड़छन करके चूरन सा बनालें मात्रा इस चूरन की १ दरम भर थोड़े ताजे पानी के साथ खाने से एक सप्ताह में विषम ज्वर दूर हो जाता है।

खून खराबी का बुखार

शरीर के जोड़दार भागों का टूटना दुखना मुंह से साँस आना शरीर का दुबला हो जाना आँखों का लाल रहना प्यास की ज्यादती बेहोशी और पेट में अफारा आ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जाना आदि खून की खराबी से पैदा हुवा बुखार कहलाता है।

४६ खून खराबी का बुखार

बांसा कटेली मुनक्का हल्दी गिलोय पोस्त हलीला सब दवाइयां समभाग लेकर इनका दो दरम का काढ़ा बनावे जब ठण्डा हो जाय तो इसमें ६ माशा शहद मिला कर पिलावे इसी प्रकार प्रतिदिन लगातार पिलाने से खून की खराबी से पैदा हुवा बुखार तीन चार दिन में ही दूर हो जाता है।

४७ बुखार खाँसी

बांसा छोटी पीपल पीपलामूल सोंठ भारंगी खेह-सार छोटी कटेली बड़ी कटेली कुलञ्जन बहेड़ा सब दवा-इयाँ सम भाग लेकर सबको खूब बारीक पीसकर उसमें शहद मिलाकर चने के समान की गोलियाँ बनाकर छाया में रखकर सुखाले मात्रा इन गोलियों की दो दो गोली सुबह तथा शाम को दोनों समय सेवन करने से खाँसी तथा बुखार को पहले दिन ही फायदा और दो चार दिन में बिल्कुल आराम हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४८ पित्त ज्वर के लिए

बांसा कुटकी पित पोपड़ा चिरायता जवासा परोंगदाना जौ सरसों के समान हुवा करता है सब समभाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ी सी मिश्री डालकर पीने से प्यास की ज्यादती जलन और पित्त का बुखार दूर हो जाता है।

४९ कफ ज्वर के लिए

बांसा कुटकी कचूर पटोलपत्र त्रिफला और गुरच सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर उसमें शहद मिलाकर पीने से कफ ज्वर तथा कफ की खराबी से पैदा होने वाली सब बीमारियाँ दूर हो जाती है।

५० सन्निपात का ज्वर

बांसा पदमाख लाल चन्दन धनिया हड़ नागरमोथा इन्द्र जौ खस गुरच अमलतास पाटे की जड़ सब सम-भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर पीपल छोटी का चूरन के साथ सेवन करने से प्यास की ज्यादती जलन खाँसी श्वांस दमा गफलत सुस्ती और सन्निपात का बुखार दूर हो जाता है भूक खुलकर लगने लगती है पेशाब तथा पाखाना खुलकर साफ आता है मितली कै और गले की बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

५१ सरदी के बुखार के लिए

वांसा मोचरस कुटकी जो नीम की छाल नारंगी पित पापड़ा भटकटिया धनिया सोंठ गुरिच नागरमोथा पद्माख लाल चन्दन चिरायता और पटोलपत्र सब दवाइयाँ समभाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर पिलाने से सरदी का बुखार दूर हो जाता है।

५२ दैनिक बुखार के लिए

वांसा अमलतास त्रिफला नीम की छाल मुनक्का और पटोल पत्र सब समभाग लेकर काढ़ा बनाकर उसमें शहद और खाँड मिलाकर पिलाने से दैनिक आने वाला बुखार दूर हो जाता है।

५३ चौथइया बुखार के लिए

वांसा हरड़ देवदार शाल पटनी सोंठ आमला और इन्द्र जौ सब समभाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर इसमें मिश्री सफेद मिलाकर पिलाने से चौथइया बुखार दमा खाँसी दूर हो जाती है और भूक खुलकर लगने लगती है।

५४ कफ ज्वर के लिए

वाँसा सोंठ नागरमोथा और जवासा चारों समभाग

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लेकर इनका काढ़ा बनाकर पीने से कफ ज्वर दूर हो जाता है।

५५ प्यास तथा जलन वाला बुखार

वांसा कुटकी पित पापड़ा जवासा मालकाँगनी और चिरायता यह सब दवाइयाँ समभाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर पीने से प्यास की ज्यादती जलन वाला बुखार दूर हो जाता है।

५६ पुराना बुखार

बाँसा के पत्ते एक तोला ६ तोला पानी में रात के समय भिगोकर रखदें और सुबह के समय इन को मसल कर छानकर प्रतिदिन लगातार पीने से पुराने से पुराना बुखार एक सप्ताह में दूर हो जाता है।

स्वर भंग

बहुत ज्यादा बोलने विष आदि के खाने तथा ऊँची आवाज से पढ़ने गाने बोलने तथा गले में किसी प्रकार से चोट लग जाने आदि से बात और कफ खराब होकर गले की आवाज की नसें जो बहने वाली हुवा करती है उनमें रहकर स्वर भंग का रोग हो जाया करता है जो ६ प्रकार का हुवा करता है एक बादी का दूसरा पित्त का तीसरा कफ का चौथा सन्निपात का यानी इन तीनों दोषों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का पाँचवा शरीर का टूटने का और छठा स्वर भंग छई के रोग से पैदा हो जाया करता है।

बाद या बात के स्वर भंग की पहचान

जिस रोगी को आँखें मुँह और पाखाना तथा पेशाब का रंग काला हो और टूटी हुई बातें उसकी जुबान से निकलें और आवाज़ गधे की सी हो तो वह वात का स्वर-भंग कहलाता है।

पित्त का स्वर भंग

जिस रोगी की आँखें मुँह पेशाब तथा पाखाने का रंग पीला हो और बोलने के समय उसके गले में जलन हो तो यह पित्त का स्वर भंग होता है।

कफ का स्वर भंग

जिस रोगी का गला हर समय कफ से भरा रहे और धीरे-धीरे आवाज़ निकाले तथा यह रोग रात के समय ज्यादा हो जाया करे तो उसका कफ का स्वर भंग समझना चाहिए।

सन्निपात का स्वर भंग

जिस रोगी के रोग में वात पित्त तथा कफ तीनों के दोष हों उसको सन्निपात का स्वर भंग कहते हैं, जिस को

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लाभ होना कठिन क्या बल्कि ला इलाज ही होता है।

छई रोग का स्वर भंग

जिस रोगी के मुँह में बोलते हुए धुवाँ सा निकले तो उसको छई रोग जानना चाहिए यह रोग भी ला-इलाज होता है।

शरीर के मुटापे का स्वर भंग

जो रोगी गले में बोले, जिसकी आवाज़ सुनाई न दे और देर से बोले, गले में जलन हो प्यास ज्यादा लगे, उस रोगी को मुटापे का स्वर भंग समझना चाहिए, यह रोगी भी अच्छा नहीं हुवा करता है ला-इलाज रोगी के बराबर ही है।

५७ स्वरभंग के लिए

बांसा ब्रह्मी, बच, पोस्त, हलीला और छोटी पीपल सब दवाइयाँ सम भाग लेकर बारीक कूट पीसकर कपड़-छन करके इसमें शहद मिलाकर रखे। मात्रा इस दवा की ६ माशा प्रतिदिन खाने से हर प्रकार का स्वर भंग दूर हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुरधरसी रोग की पहचान

इस रोग में पहले कूल्हे में दर्द चालू होकर फिर शरीर के जोड़दार भागों में दर्द होकर पाँव को नाकारा कर दिया करता है इस रोग का गुरधर सी का रोग कहते हैं जो दो प्रकार का हुवा करता है। एक वात का दूसरा कफ का होता है। वात के में तो दर्द ज्यादा होता है और उसमें सर टेढ़ा हो जाया करता है, पाँव और जाँघ तथा शरीर के सब भाग फड़क फड़क कर सुन्न हो जाया करते हैं और वात और कफ की खराबी से शरीर भारा रहने लगता है, हाजमा यानी भूक थक जाती है। गफलत भी हो जाया करती है तथा रतूबत बहुत गिरने लग जाया करती है।

५८ गुरधरसी के रोग के लिए

बांसा असलतास का गूदा दायतूनी इन तीनों को सम भाग लेकर काढ़ा बनाकर उसमें आधा छटाँक शुद्ध अरण्डी का तेल मिलाकर पिलाने से गिनती के दिनों में यह रोग दूर हो जाता है।

वात रक्त

ज्यादा नमक तथा गरम चीजें सड़ा हुवा मांस खली मूली कल्थ माश बहुत तरकारी मांस मछली दही और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दही के साथ दूध और सिरके के साथ मछली आदि खाने से वात खराब होकर तरह तरह की बीमारियाँ कर दिया करता है, अरक तथा काँजी के पीने से ज्यादा गुस्सा करने से दिन में सोने और रात में जागने से हाथी घोड़ा तथा ऊँट आदि पर बैठकर दौड़ाने भगाने से कोमल मनुष्यों को वात रक्त का रोग पैदा हो जाया करता है।

वात रक्त की पहली शक्ल

पसीने का ज्यादा आना या बिल्कुल न आना शरीर का रंग काला पड़ जाना, शरीर के छूने से छूना मालूम न देना, थोड़ी सी चोट में दर्द ज्यादा होना, शरीर के भागों का सुन्न हो जाना और सुस्त रहना, फुन्सियों का निकलना, घुटने, जाँघ, कमर, हाथ तथा पाँव में दर्द रहना, शरीर का सुन्न हो जाना तथा जलन रहना, शरीर में लाल लाल धपड़ से या चकत्ते से पड़ना, वात रक्त के खराब होने की पहली शक्ल है। पाँव में दर्द ज्यादा होना और उनका फड़कना तथा उनमें सूजन का आ जाना, पाँव का रंग लाल पड़ जाना, शरीर का जकड़ बन्द हो जाना और उसका काँपना, शरीर का सूख जाना आदि वात रक्त की पहचान है।

शरीर में सूजन का आ जाना और दर्द होना तथा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सूजन में सुरखी का होना और उसमें खाज चलना आदि भी वात रक्त कहलाता है।

पित्ताधिक वात रक्त

जिस में जलन गफलत और सूजन हो पक जाय तथा गरम ज्यादा हो तो वह पित्ताधिक वात रक्त होता है।

कफादिक वात रक्त

शरीर का कमज़ोर भारी चिकना तथा ठण्डा रहना सुन्न हो जाना और उसमें खाज चलना आदि कफादिक वात रक्त कहलाता है।

ला इलाज वात रक्त

जिस रोगी के पाँव के तलवों से लेकर घुटनों तक फुन्सियाँ हों शरीर की ताकत मांस तथा हाजमा सब कमजोर हो गये हों तो यह रोग वात रक्त का ला इलाज जानना चाहिए किन्तु ऐसा रोगी एक साल तक जीवित रह सकता है।

वात रक्त का फिसाद

नींद का न आना, खाने को दिल न चाहना, दमा का रोग हो मांस गल जाय सर में दर्द और बेहोशी भी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हो जाया करे प्यास की ज्यादती बुखार हिचकी शरीर का काँपना, उँगली का गल जाना, फुन्सियों का पकना और उनमें टीस चबक का होना, चक्कर आना, उँगलियों का टेढ़ा हो जाना, अगर फोड़ा हो तो उसमें जलन का रहना आदि वात रक्त की खराबी कहलाता है

५६ वात रक्त के लिए

बांसा छतावर नेत्रबाला गिलोय बाबची पवांड़ नीम की छाल पोस्त हलीला और हल्दी इन सबको सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर पीने से कोढ़ खुजली जलन तथा वात रक्त की सब खराबियाँ दूर हो जाती हैं।

६० वात रक्त

बांसा गिलोय अरण्ड की जड़ इन तीनों को सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर और उसमें गूगल तीन माशा अरण्ड का शुद्ध तेल आधा छटाँक डालकर पिलाने से वात रक्त की खराबी के सब रोग दूर हो जाते हैं।

६१ बात रक्त

बांसा गुरूच अरण्ड की जड़ इन तीनों को सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर उत्तम अरन्ड का शुद्ध तेल डालकर पिलाने से वात रक्त की सब खराबियाँ दूर हो जाती हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६२ रक्त पित्त के लिए

बांसा गुरूच अरण्ड की जड़ इन तीनों को सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर उसमें अरन्ड का शुद्ध तेल डालकर पिलाने से वात रक्त की सब खराबियाँ दूर हो जाती हैं।

६३ रक्त पित्त

बाँसा के पत्तों का पुट पाक रस निकालकर उस में शहद मिलाकर पिलाने से रक्त पित्त से पैदा हुए हर प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

६४ रक्त पित्त

बांसा खार को शहद में मिलाकर चटाने से रक्त पित्त से पैदा हुई खाँसी तथा बुखार आदि को बहुत जल्द आराम हो जाता है।

६५ रक्त पित्त

बांसा भटकरिया गरूच इन तीनों को सम भाग लेकर बारीक कूट पीसकर चूरन सा बनाकर इसमें शहद मिला कर खाने से रक्त पित्त से पैदा हुई खाँसी तथा बुखार को दो तीन दिन में ही आराम हो जाता है।

————

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुल्म रोग तथा पेट के गोल

गुल्म रोग का गोला दोनों पसलियों में, छाती में, नाभी में और पेड़ू में हुवा करता है छाती और पेड़ू के बीच में गाँठ हो और फिरे या न फिरे किन्तु गोल हो और बढ़ती जाये उसको गुल्म रोग कहते हैं इस रोग में पेशाब तथा पाखाना दुहरा उतरने लग जाया करता है हवा बढ़ कर अन्तड़ियाँ बोला करती हैं पेट में अफार भी हो जाया करता है यह सब गुल्म रोग कहलाता है।

गुल्म का गोला

रूखा भोजन खाने, ऊँची नीची जगह में ज्यादा बैठने, पेशाब को रोकने ज्यादा रंज फिकर करने तथा चोट के लगने भूका रहने आदि से यह गोला पैदा हो जाया करता है।

इस गोले की जगह में अगर दर्द घटे और बढ़े पाखाना साफ़ खुलकर न आये मुँह और गला सूखे शरीर का रंग काला पड़ जाये सरदी का बुखार हो छाती कूख पसली और सर इन सब जगहों में दर्द हो और खाना हज़म हो जाने के पश्चात् छाती में दर्द हो जाना आदि गुल्म रोग की खराबी कहलाती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पित्त का गुल्म या गोला

कड़वी तीखी खट्टी और गरम आदि चीजों के ज्यादा सेवन करने से ज़्यादा गुस्सा करने ज़्यादा शराब पीने तथा आग या धूप में ज़्यादा रहने या बैठने से आँच के बढ़ने से चोट के लगने से और खून के खराब हो जाने से पित्त खराब होकर उसका गोला बन जाया करता है जिसमें बुखार और प्यास की ज्यादती शरीर में दर्द टीस और जलन हो शरीर का फटना और उस गोले में हाथ लगाने से दर्द ज्यादा होना खाना खाते समय पसीना ज्यादा आना आदि पित्त का गुल्म कहलाता है।

कफ का गुल्म या गोला

ठण्डो भारी चिकनी चीजों के ज्यादा खाने से ज्यादा बैठे रहने से दिन में सोने से यह कफ का गोला पैदा हो जाया करता है अगर इसमें पित्त वाले गोले तथा सब प्रकार के रोग पाये जायें तो यह गोला सन्निपात का तथा तीनों दोषों का कहलाता है। कफ के गुल्म या गोले में बुखार सरदी से और शरीर में दर्द हुवा करता है कड़वी तथा खट्टी कै भी हो जाया करती है।

स्त्रियों के मासिक धर्म के खून का गोला

यह खून का गोला स्त्रियों के कच्चे गर्भ को गिरा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दिया करता है पहले गर्भ के मासिक धर्म के समय या इससे पहले भी स्त्री की वात खून को पकड़ कर गोला वना दिया करती है इस गोले में दर्द और जलन ज्यादा हो पित्त के गोले वाली तकलीफें भी हों, वह गोला पेट में फिरे और दर्द हो और गोले में गर्भ के सब आसार हों उसको खून से पैदा हुवा गोला कहते हैं किन्तु जब तक स्त्री को दस महीना समाप्त न हों इस गोले का इलाज नहीं करना चाहिए।

लाइलाज गोला

जिस रोगी का गोला फिरे या न फिरे किन्तु दर्द बहुत ज्यादा हो सोजिश हो गांठ पत्थरी जैसी ऊँची हो वह गाँठ शरीर को कमजोर करके पाचन शक्ति को नष्ट करदे तो यह गोला सन्निपात का समझना चाहिए जो अच्छा नहीं होता। जो गोला लगातार बढ़े, दर्द हो और कछुवे जैसा सख्त हो, शरीर दुबला हो जाय, भूक थक जांय कड़वी तथा खट्टी कै आवें, प्यास की ज्यादती बुखार और गफलत हो। पीनस का रोग या दस्त हों, छाती, नाभी तथा हाथ पैरों में सूजन आ जाय तो यह गोला ला-इलाज समझना चाहिए।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६६ गुल्म के लिए

बांसा नदीकड़ा आक सहजना कटेली छोटी थोहर बेल बकायन अन्धी झाड़ा कदम्ब इन सब चीजों के खार और सांभर नमक सब सम भाग लेकर फिर इस में मात्रा अनुसार भूनी हुई हींग मिलाकर ६-६ माशा की मात्रा में सुबह तथा शाम को गरम पानी के साथ खाने से गुल्म पानी गोला सूल तथा पेट के सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

मूत्र कृच्छ्र

मूत्र कृच्छ्र का रोग आठ प्रकार का हुवा करता है एक वात का दूसरा पित्त का तीसरा कफ का चौथा सन्निपात का यानी तीनों दोषों का पाँचवाँ चोट लग जाने से, छठा पाखाना के रोकने से, सातवाँ धात रोकने से, आठवाँ पथरी का होना।

मूत्र कृच्छ्र की पहचान

वात पित्त तथा कफ ज्यादा खराब होकर पेड़ू में जाकर पेशाब के रास्ते में दर्द पैदा करके टीस पैदा कर दिया करते हैं जिनसे पेशाब बड़ी तकलीफ से उतरा करता है और पेशाब करने में ज्यादा दर्द होता है, यह मूत्र कृच्छ्र कहलाता है रान और पेड़ू के जोड़ में तथा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पेशाब के रास्ते में ज्यादा दर्द हुआ करता है। पेशाब थोड़ा २ बार-बार आता है उसको वात का मूत्र करछर कहते हैं।

पित्त का मूत्र कृच्छ्र

जिस रोगी के पेशाब का रंग पीला और लाल तथा गरम उतरे और बहुत तकलीफ़ टीस के साथ उतरे उसको पित्त का मूत्र कृच्छ्र कहते हैं।

जिस रोगी के पेड़ू भारी हों और पेशाब में झाग हो और पेशाब मुश्किल से आये उसको कफ का मूत्र कृच्छ्र कहते है और जिस में सब खराबियाँ पाई जायें वह सन्निपात यानी तीनों दोषों का कहलाता है।

चोट का मूत्र कृच्छ्र

पेशाब की बहाने वाली नसों में किसी प्रकार से चोट लग जाने से पेशाब रुक जाय और उसमें वात के मूत्र कृच्छ्र के से हालात हों तो यह रोगी जीवित नहीं रहता मर जाता है।

पाखाना रोकने का मूत्र कृच्छ्र

जो मनुष्य पाखाना के दबाव को रोके उसका वात खराब होकर पेट में अफार पैदा करके मसाने में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खराबी पैदा कर देता है जिससे पेशाब बड़ी तकलीफ के साथ उतरने लगता है।

धात रोकने के लिए मूत्र कृच्छ्र

धात रोकने से पेशाब का रास्ता रुक जाया करता है अगर पेड़ू तथा पेशाब की नाली में दर्द हो और धात को साथ लिए पेशाब बड़ी तकलीफ से उतरे तो वह धात रोकने का मूत्र कृच्छ्र कहलाता है।

पथरी का मूत्र कृच्छ्र

पथरी और रेत(वीर्य) यह दोनो अण्ड कोषों यानो फोतों में रहा करते हैं जिन से मूत्र कृच्छ्र का रोग पैदा हुवा करता है यह पथरी पित्त की खराबी से जलकर तथा वात की खराबी से रूखी होकर पथरी की शक्ल में आकर पेशाब को रोक दिया करती है इसको पथरी का मूत्र कृच्छ्र कहते हैं।

शर्करा यानी रेत

छाती में दर्द हो, शरीर काँपे, कोख में सूल उठें, आमाशय कमज़ोर हो जाय तथा साथ में बेहोशी भी हो तो वह रोगी जीवित नहीं रह सकता।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

६७ मूत्र कृच्छ्र के लिए

वांसा धमासा पाखानभेद अमलताश का गूदा गोखरू और पोस्त हलीला सब चीजें सम भाग लेकर इन सबका काढ़ा बनाकर उसमें शहद मिलाकर पीने से हर प्रकार का मूत्र कृच्छ्र तीन चार दिन में ही बिल्कुल दूर हो जाता है।

६८ मूत्र कृच्छ्र तथा पथरी

बांसा अरण्ड की जड़ छोटी इलायची छोटी पीपल महवा पाखानभेद पित्त पापड़ा और गोखरू यह सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर और उसमें सलाजीत डालकर पीने से हर प्रकार का मूत्र कृच्छ्र तथा पथरी एक सप्ताह में दूर हो जाती है।

अण्ड कोशों (फोतों) का बढ़ना

यह रोग ६ प्रकार का हुवा करता है एक वात का, दूसरा पित्त का, तीसरा कफ का, चौथा खून का, पाँचवाँ चरबी का, छठा पेशाब का और वात से आँतों के बढ़ने का हुवा करता है।

नीचे जाने वाली हवा खराब होकर अण्डकोष (फोतों) और जाँघकी जड़ोमें घूमती हुई वहाँ पर ठहर कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दर्द और सूजन पैदा करके फिर इन दोनों फोतों की खाल की भण्डारी की बहने वाली नसों में दर्द पैदा करके दोनों फोतों तथा दोनों भण्डारों को बढ़ा दिया करती है।

यह हवा की भरी हुई लुहार की धोंकनी के अनुसार हो और रूखी हो और दर्द हो तो यह वात की खराबी कहलाता है और जिसका रंग पके हुए गूलर के रंग जैसा हो और उसमें जलन तथा पीप हो उसको पित्त की खराबी कहते हैं जो ठण्डी भारी चिकनी हो और उसमें खाज भी बहुत हो और कुछ दर्द भी हो तो वह कफ की कहलाती है तथा अगर रंग उसका काला हो फोड़े हों तो उसको खून की खराबी कहते हैं।

६९ बढ़े हुये फोतों के लिए

बांसा पटील पत्र गोखरू रासना गिलोय भतहटी अरण्ड की जड़ अमलतास का गूदा सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर फिर इसमें अरण्ड का तेल शुद्ध मिलाकर पिलाने से बढ़ी हुई आँत तथा फोते अच्छे हो जाते हैं।

शोथ रोग-सूजन

यह रोग ६ प्रकार का हुवा करता है एक वात का,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दूसरा पित्त का, तीसरा कफ़ का, चौथा सन्निपात का, पाँचवाँ खून का, यानी खून खराब हो जाने से और छठा किसी प्रकार की लकड़ी आदि से चोट लग जाने से पहले घाव होकर फिर घाव में सूजन या पहले सूजन होकर फिर घाव हो जाया करता है।

वात का घाव जो होता है वह अच्छी तरह पका नहीं करता है और पित्त बहुत जल्द पक जाया करता है। कफ का घाव बहुत देर से पका करता है और खून तथा चोट लग जाने का तत्काल पक जाया करता है।

जिस सूजन में गरमी और सूजन कम हो तथा सख्त हो उसका रंग शरीर के रङ्ग जैसा ही हो और दर्द भी कम हो तो उस सूजन को कच्चा जानना चाहिए अगर सूजन आग की तरह जले और खार की तरह पके चोवटी तथा छुरी की तरह काटे और डण्डे की तरह मारे और हाथ के छूने से दर्द हो जैसा सुई से छिदा हुवा उङ्गली लगाने से बड़ा दर्द हो, दर्द से किसी समय भी चैन न हो उसमें बिच्छू के काटे का सा दर्द हो प्यास और बुखार हो तो उस सूजन को पका हुवा जानना चाहिए।

जिस सूजन में दर्द न हो और लाल रङ्ग हो बहुत

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उभरी हों, सूजन में सलवट पड़ें, दर्द हो तथा खाज भी चले और यह तकलीफें दूर हो जायें किन्तु सूजन फिर न जाय, खाल फटने लगे उसमें उङ्गली लगाने से दर्द हो और पीप निकले तो उसको पका हुवा जानना चाहिए सूजन में हवा के बगैर दर्द नहीं हुवा करता है और पित्त के बगैर पका नहीं करता तथा कफ के बगैर इसमें पीप नहीं पड़ता है इसलिए जब यह पक जाया करता है तो इसमें तीनों ही दोष हुवा करते हैं अगर इसके इलाज में देरी की जाय तो पित्त बढ़ कर कफ को लेकर पकाता है फिर खून को पकाकर पीप पैदा करता है अगर यह पीप निकाला न जाय यह पीप किसी कारण से अन्दर रुक जाय तो यह पीप शरीर के मांस तथा नसों तक को खा जाता है, अगर घाव सख्त हो और पीप उसमें से धीरे-धीरे निकले दर्द ज्यादा हो घाव का रङ्ग काला हो तो उसको वात का घाव समझना चाहिए। अगर घाव के साथ प्यास ज्यादा तथा बुखार और गफलत भी हो और जब वह फूटे तो दुर्गन्धित पीप निकले तो उसको पित्त का घाव समझना चाहिए। जिस घाव में भारीपन तथा चिकनापन हो और दर्द कम हो रङ्ग उसका पीला हो और देर से पके उसको कफ का घाव कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अगर घाव का रङ्ग लाल हो, उसमें खून बहुत निकले तो वह खून का घाव कहलाता है। जिस घाव का रङ्ग जुबान की नीचे की पेंदीं जैसा हो साफ तथा चिकना हो उसमें दर्द भी न हो पीप आदि उसमें से निकलना बन्द हो गया हो तो वह घाव जल्दी अच्छी हो जाता है।

जिस घाव में पीप और खून बदबूदार निकले और सूजन भी हो वह घाव खराब होता है जो घाव पीले रंग का हो वह भी अच्छा नहीं होता है जिस घाव में दाने अच्छी तरह निकलें और गाँठ न हो वह घाव भर गया समझें।

ला-इलाज घाव

जिस घाव में जलन बहुत हो और घाव बाहर से ठण्डा हो तथा रगों का मांस और खून सूख गया हो दमा खाँसी आदि का भी रोग हो और उस रोगी की आयु पचास साल से ज्यादा हो चुकी हो और घाव से पीप का आना बन्द न होता हो तो तथा वह घाव मर्म जगहों में हो तो ऐसे घाव का आराम होना बहुत मुश्किल क्या बल्कि हो ही नहीं सकता ला इलाज समझें।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हथियार से पैदा हुवा घाव

जिस घाव के रोगी की पसली तथा छाती में दर्द हो बुखार और सूजन हो मुँह, नाक, पेशाब, पाखाना आदि के रास्ते से खून निकलता हो बेहोश हो दमा प्यास की ज्यादती अफारा हो पेशाब पाखाना रुक गया हो पसीना ज्यादा आता हो आँखों का रंग लाल हो मुँह में से खून तथा शरीर में से बदबू आती हो तो उस रोगी का घाव किसी बरछी सेल छुरी या चाकू तलवार आदि के लगने का घाव समझना चाहिए।

जिस घाव का रंग काला हो और उसमें सूजन भी हो तथा उसमें साथ ही फुन्सियाँ भी हो और उसके घाव का माँस बुलबुले की तरह ऊँचा उठा हुवा हो उसमें दर्द भी हो तो उस घाव में हथियार की नोंक गोली छर्रा कील काँटा आदि कुछ न कुछ रह गया समझना चाहिए।

जिस घाव के मुँह में पाखाना तथा पेशाब आ जावे उस रोगी के पेट में अफ़ारा हो तो उस रोगी के आमाशय में हथियार की नोंक गोली छर्रा कील काँटा आदि कुछ न कुछ रुका हुवा समझें, जिस रोगी को बेहोशी हो या प्रलाप बकवास करे गिर पड़े होश न रहे दर्द ज्या[illegible]

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हो तथा उसका खून मांस के पानी जैसा हो जाय तो उस रोगी के मांस तथा नसों में या मर्म स्थानों में चोट लगी हुई जाननी चाहिए।

७० घाव के लिए

बांसा के पत्तों को पानी में उबालकर इस पानी से घाव नासूर आदि धोने से गन्दे से गन्दा घाव तथा नासूर आदि जल्दी अच्छे हो जाते हैं।

७१ फोड़ों के लिए

बांसा के पत्तों को उबालकर उसको पुलटस बनाकर गाँठ गिलटी फोड़ा आदि पर बांधने से पिघलकर बैठ जाते हैं तथा जो पक गये हों वह तत्काल फूटकर साफ़ हो जाते हैं।

७२ गाँठ फोड़ा सूजन

बांसा की जड़ को छाया में सुखाकर जब वह अच्छी तरह सूख जाय तो बारीक कूट पीस कर उसका चूरन-सा बनाकर कपड़ छान करलें फिर इसको पानी के साथ खूब रगड़ घोटकर गाँठ गिलटी फोड़ा आदि पर गाढ़ा गाढ़ा लेपन करदें इसके लेपन करने से हर प्रकार की सूजन दूर हो जाती है तथा कच्चा फोड़ा पिघल कर बैठ जाता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और पका हुवा फूटकर साफ़ हो जाता है फोड़ों को फोड़ने तथा बिठाने के लिए बड़ी लाभदायक दवा है जो लगती बिल्कुल नहीं है।

७३ घाव के लिए

बांसा की जड़ सरसों के तेल में डालकर आग पर रख कर पकावें जब जड़ जलकर कोयला बन जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़े में से छानलें फिर इस तेल को घाव पर लगाने से गन्दे से गन्दे हर प्रकार के तथा नासूर आदि बहुत जल्द भरकर अच्छे हो जाते हैं।

७४ चर्म-रोग के लिए

बांसा के पत्ते छाया में सुखाये हुए को खूब बारीक कूट पीसकर कपड़छन करलें फिर इसमें से यह चूरन दो तोला बांसा खार एक माशा मिलाकर रखलें फिर तेल सरसों एक छटाँक में दो तोला मोम सफेद मिलाकर आग पर रख कर गरम करें जब मोम गल कर तेल में अच्छी तरह मिल जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़े में से छान लें और फिर उसमें बाँसा के पत्तों का चूरन जिस में बांसा खार भी मिलाकर पहले रख लिया था इस मोम मिले तेल में डालकर अच्छी तरह मिलालें आग पर दुबारा न रखें नीचे ही मिला लें [illegible]

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बढ़िया मरहम तय्यार हो जायगा इस मरहम को गाँठ गिलटी फोड़ा बद घाव तथा नासूर दाद खाज खुजली आदि पर लगावें और बांसा के पत्तों के गरम पानी से धोवें हर प्रकार की गाँठ गिलटी फोड़ा बद घाव नासूर दाद खाज खुजली आदि अच्छे हो जाते हैं।

कुष्ट या कोढ़

यह रोग मनुष्य शरीर की सुन्दरताई को खराब कर दिया करता है, शरीर की खाल का रंग जहाँ तहाँ से सफेद २ लाल-सा चितकबरा सा हो जाया करता है यह रोग ज्यादा मछलियां खाने से दूध के ऊपर खट्टी चीजें खा लेने से दूध और मछली साथ खाने से यह रोग ज्यादा और जल्दी ही पैदा हो जाया करता है पहले शरीर पर सफेद २ रंग के दाग धब्बे से पड़ जाया करते हैं जो बहुत छोटे २ हुवा करते हैं किंतु पीछे बढ़ते २ फैलाते हुये चले जाया करते हैं और यहाँ तक फैल जाया करते हैं कि तमाम हाथ पैर चेहरा गर्दन सारे शरीर की रंगत ही सफेद हो जाया करती है।

ला-इलाज कुष्ट या कोढ़

पेशाब तथा पाखाना की जगह का कोढ़ तथा मुँह ...शों का कोढ़ तो बिल्कुल ही ला-इलाज है और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जिस कोढ़ का असर चरबी तक चला जाता है उसमें कीड़े पड़ जाते हैं सूजन पैदा हो जाया करती है उस रोगी का आमाशय खराब हो जाया करता है तथा वह कोढ़ जो तीनों दोषों का होता है वह ला-इलाज होता है और जिस कोढ़ का असर धात के अन्दर चला जाता है वह भी ला-इलाज होता है।

कोढ़ के दाग़ की जगह पर सूई चुभो कर देखें अगर वहाँ से खून निकले तो उसको आराम हो सकता है और खून के बदले पानी या पानी-सी रतूबत निकले तो वह ला-इलाज समझना चाहिये इस रोग का इलाज करने के लिए रोगी को सबसे पहले जुलाब देना जरूरी तथा लाभदायक होता है।

७५ कुष्ट कोढ़ के लिए

बांसा पित्त पापड़ा सरसों सफेद अतीस जवासा इन्दरायन की जड़ मजीठा इन्दर जौ गिलोय नागरमोथा वच जन्जबील चीत्र पीली छोटी बड़ी कटेली नीम की छाल पटोल पत्र कूट कटकी भारंगी बायबड़ङ्ग चत्रक सूरबा दब दुनार जल भांगरा पीपल तरायमान पाट सता-वर खैर सार बिजे सार तिरफला चिरायता बकायन अमलतास का गूदा नसोत बाबची लाल चन्दन बरना दाय तूनी शाखोटक यह सब दवाइयाँ सम भाग ले

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अधकुटा करके पाँच दरम का काढ़ा प्रति दिन पिलाने से कुछ ही दिनों में हर प्रकार का कुष्ट यानी कोढ़ दूर हो जाता है।

७६ कुष्ट कोढ़ के लिए

वांसा एक छटांक काली मिरच नसोत नागरमोथा हड़ताल इन्दरायन की जड़ कलौन्जी दोनों हलदी बालछड़ कूट लाल चन्दन मैनसल देव दुवार आक का दूध गोबर का रस यह सब दवाइयाँ ६-६ माशा लेकर सांगवसरी १ तोला सरसों का तेल एक सेर पानी चार सेर और गाय का पेशाब आठ सेर लेकर इन सब को आग पर रख कर धीमी धीमी आग से पकावें जब सब पानी और गाय का पेशाब आदि जल जाय केवल तेल ही तेल बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़े में से छान लें और फिर इस में ६ माशा वांसा खार मिलाकर बोतलों में भर कर रखलें इस तेल की मालिश करने से हर प्रकार का कुष्ट—कोढ़ दूर हो जाता है।

७७ कुष्ट-कोढ़

अमचूर में थोड़ा सा सेंधा नमक और बांसा खार डालकर बांसा के पत्तों के पानी में तांबे के बरतन में तांबा के घोटे से खूब बारीक घोटकर गाढ़ा गाढ़ा लेपन करने से कुछ ही दिनों में हर प्रकार का कोढ़ दूर हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

७८ चर्म रोग तथा कोढ़

बांसा के पत्ते तथा जड़ का काढ़ा बनाकर प्रतिदिन लगातार पिलाने से गिनती के दिनों में हर प्रकार का कोढ़ तथा दाद खाज खुजली आदि हर प्रकार के चर्म रोग दूर हो जाते हैं।

७९ कोढ़ के लिए

बांसा के पत्ते तथा बासा की जड़ सम भाग लेकर सरसों के तेल में डालकर आग पर रख कर पकावें जब पत्ते तथा जड़ जलकर राख हो जावें तो आग से नीचे उतार कर छानलें और इसमें थोड़ा-सा बांसा खार मिला-कर लगावें कोढ़ के दाग़ दूर हो जाते हैं।

८० कोढ़ के लिए

बांसा के पत्ते तथा बांसा की जड़ सम भाग लेकर बांसा के पत्तों के पानी के रस में खूब बारीक पीसकर कोढ़ के दागों पर गाढा गाढा लेपन कर दिया करें कुछ ही दिनों में कोढ़ के दाग़ समूल नष्ट हो जायेंगे।

८१ कोढ़ हर प्रकार के लिए

बांसा के पत्ते पाव सेर उशबा विलायती तीन छटाँक तिरफला पाव सेर नीम के पत्ते लाल चन्दन धनियाँ चोब चीमी चिरायता सर कूका गोरख मुण्डी सफेद जीरा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नीलोफर फूल बनफशा गाव जुबान के पत्ते उन्नाब बेर पित्त पापड़ा मजीठा करञ्जवा हल्दी दारु हल्दी सब १-१ छटाँक लेकर सब दवाइयों को अधकुटा करके आठ गुना पानी में भिगोकर रखदें और तीन दिन तक भीगा रहने दें चौथे दिन आग पर रखकर धीमी धीमी आग से पकावें जब पकते हकते चौथाई रह जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़े से छान लें मात्रा इस दवा की आधी आधी छटाँक से १-१ छटाँक तक सुबह तथा शाम को दोनों समय पिलावें। नमक मिरच का परहेज रखें कुछ ही दिन में हर प्रकार का कोढ़ दूर हो जाता है।

८२ कोढ़ के लिए

नीला थोथा सुहागा दोनों दो दो तोला बावची एक छटाँक तीनों को खूब बारीक पीसकर इसमें बांसा के पत्तों केपानी के सात पुट देकर फिर इसका लेपन करे हर प्रकार का कोढ़ दूर हो जाता है।

८३ कोढ़ तथा कण्ठमाला

बांसा खार एक छटाँक गोरख मण्डी का खार काहू का खार पीपल का खार पापड़ या खार आक का खार सख का खार आँधी झाड़ा का खार तिल का खार साठी का खार हलीला का खार पटोल का खार अरण्ड का ... नवाखार और पारा सब चीजें दो-दो तोला सुहागा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सज्जी नौशादर गन्धक आमलासार पाँचों नमक कूट जन्जबील काली मिरच पीपल डांसरा की जड़ आक की जड़ बांसा की जड़ कटहारी की जड़ नीलाथोथा हल्दी जमीकन्द राई सरसों सिन्दूर सलाजीत कमेला लोध पठानी थोहर की जड़ आम की जड़ और चत्रक सब दवाइयाँ दो-दो तोला लेकर सबको बारीक कूट पीस कर थोड़े गाय के पेशाब में मिलाकर तांबे के बड़े बरतन में डालकर फिर इसमें भैंस घोड़ा बकरा हाथी तथा ऊँट का पेशाब लीबू बजीरा और नारङ्गी का रस सहजना का रस राई काँजी सब अन्दाज अनुसार थोड़ी थोड़ी डालकर फिर इस बर-तन का मुँह बन्द करके चालीस दिन तक रखा रहने दें इसके बाद इस दवा में से थोड़ा थोड़ा लेकर खूब बारीक रगड़ घोटकर कोढ़ के दागों पर गाढ़ा गाढ़ा लेपन कर दिया करें कण्ठमाला विसरप बवासीर और हर प्रकार के कोढ़ नष्ट हो जाते हैं।

शीत पित्त

ठण्डी हवा के लगने से कफ और वात पित्त के समेत खराब होकर अन्दर तथा बाहर खाल तथा वात और कफ से सरदी और गरमी के फिसाद हो जाया करते हैं अगर रोगी को प्यास ज्यादा लगे, कै आवे, शरीर में दर्द हो और शरीर भारी रहे, आँखें लाल में हो जावें

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उस रोगी को शीत पित्त का रोग समझना चाहिए जैसे कीड़े आदि के काटने से चकत्ते तथा दक्कड़ या दप्फड़ से पड़ जाया करते हैं जैसे दप्फड़ से पड़कर उनमें खाज चले और दर्द हो कै तथा बुखार हो शरीर में जलन-सी मालूम दे तो उस रोगी को शीतपित्त का रोग समझना चाहिए।

शीत पित्त के लिए

वांसा कुटकी पटोल पत्र तिरफला लाल चन्दन नीम की छाल और चिरायता सब सम भाग लेकर इन सबको काढ़ा बनाकर पिलाने से पित्ती का रोग फोड़ा जलन का बुखार मुँह तथा गले का सूखना प्यास की ज्यादती और कै आदि सब रोग इस काढ़े के पीने से दूर हो जाते हैं किन्तु यह काढ़ा पीकर लाल या काला कम्बल बिछाकर और लाल या काला ही कम्बल ओढ़ कर लेट जाना चाहिए थोड़ी देर में ही पित्ती को आराम हो जायगा।

८५ शीत पित्त

वांसा के पत्तों के पानी में थोड़ी सी फिटकरी सफेद घोट पीसकर मिलाकर शरीर पर उसकी मालिश करने से पित्ती शीतपित्त को तत्काल आराम हो जाता है।

८६ शीत पित्त

[illegible] के दाने काली मिरच और हल्दी सब दो-दो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तोला लेकर इन सबको खूब बारीक कूट पीसकर कपड़छन करलें फिर बांसा के पत्तों के रस में घोट कर झाड़ी के बेर के समान गोलियाँ बनाकर छाया में रखकर सुखालें मात्रा १-१ गोली ताजा पानी के साथ खाने से पित्ती शीत पित्त को आराम हो जाता है।

अम्ल पित्त

नमक खटाई और गरम चीजों के ज्यादा खाने से पित्त खराब होकर अम्ल पित्त का रोग पैदा कर दिया करता है यह रोग तीन प्रकार का हुवा करता है। (१) वात का (२) कफ का (३) वात व कफ का मिला हुवा होता है।

अम्ल पित्त रोग की पहिचान

भोजन का अच्छी तरह न पचना, कड़वी तथा खट्टी डकारों का आना, कै होना, शरीर का भारी मालूम होना, छाती और गले में जलन-सी रहना, खाना खाने से नफरत हो जाना, आदि अम्ल पित्त का रोग कहलाते हैं।

यह रोग दो प्रकार का हुवा करता है। एक मुँह के दुवारे और दूसरा पाखाना के रास्ते से होता है यह रोग नया तो जल्दी अच्छा हो जाता है किन्तु अगर यह बहुत पुराना हो जाता है और रोगी इसके परहेज की परवाह न करे तो फिर यह रोग ला-इलाज हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

८७ अम्ल पित्त के लिए

वांसा तथा नीम की छाल पटोल पत्र यह तीनों सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर अम्ल पित्त के रोगी को पिलावें रोगी को तत्काल कै हो जायगी और अम्ल पित्त के रोग को आराम हो जायगा बड़ी लाभदायक दवा है।

८८ अम्ल पित्त के लिए

वांसा जौ आमला पत्रज तज और छोटी इलायची सब चीजें सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर उसमें शहद मिलाकर पिलाने से हर प्रकार का अम्लपित्त दूर हो जाता है।

८९ अम्ल पित्त

वांसा गिलोय पित्त पापड़ा चिरायता नीम की छाल जल भाँगरा तिरफला सब चीजें सम भाग लेकर इन सबको बारीक कूट पीसकर चूरन-सा बनालें मात्रा इस चूरन की ६-६ माशा प्रतिदिन सुबह तथा शाम को ताजा पानी के साथ पीने से हर प्रकार का अम्लपित्त दूर हो जाता है।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वि सर्प रोग

नमक खटाई और गरम चीजें ज्यादा खाने से वात पित्त तथा कफ खराब होकर शरीर के खून मांस आदि सातों धातों को खराब करके शरीर में छोटी छोटी बहुत फुन्सियों के घेरे को फैला दिया करते हैं इसलिए इसको विसर्प का रोग कहते हैं यह रोग सात प्रकार का हुवा करता है। (१) वात का (२) पित्त का (३) कफ का (४) सन्निपात का यानी तीनों दोषों का (५) वात और पित्त का मिला हुवा (६) वात और कफ का मिला हुवा (७) कफ और पित्त का कहलाता है।

ला इलाज

विसर्प रोग की पहचान

वात पित्त कफ यानी सन्निपात का विसर्प आग से पैदा हुवा विसर्प और मर्म स्थानों में जो विसर्प रोग होता है उसको तथा इन सबको आराम होना अति कठिन क्या बल्कि हो ही नहीं सकतायह सब ला-इलाज है।

६० विसर्प रोग के लिए

वांसा कुटकी पटोल पत्र तिरफला लाल चन्दन नीम की छाल तगर सिरस की जड़ मलहठी ...

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बालछड़ दोनों हल्दी नेत्रबाला। सब चीजें सम भाग लेकर पानी के साथ बारीक पीसकर उसमें गाय का घी मिलाकर लेपन करने से विसर्प रोग दूर हो जाता है।

६१ विसर्प रोग

वांसा चिरायता कुटकी पटोल तिरफला नीम की छाल लाल चन्दन सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बना कर पीने से हर प्रकार का विसर्प, जलन, बुखार, सूजन, खुजली, फोड़े और कै आदि तमाम रोग नष्ट हो जाते हैं।

बसफोटिक रोग

यह रोग आठ प्रकार का हुवा करता है। (१) वात का (२) पित्त का (३) कफ का (४) वात और पित्त का मिला हुवा (५) वात और कफ का मिला हुवा (६) पित्त और कफ का मिला हुवा (७) सन्निपात का यानी तीनों दोषों का और (८) खून का होता है। मगर सर में दर्द रहे और फोड़े में बहुत दर्द हो, बुखार और प्यास ज्यादा हो, आँखों का रङ्ग काला हो वह वात का कहलाता है और जिस में बुखार, जलन, फोड़े में दर्द हो किन्तु जल्द [illegible] प्यास ज्यादा लगे फोड़ों तथा घावों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का रङ्ग लाल या पीला-सा हो वह पित्त का कहलाता है, और जो देर में पके वह कफ का कहलाता है जिस में दर्द बहुत हो उसको वात पित्त का समझना चाहिये। शरीर का भारापन तथा उसमें खुजली चले तो वह वात कफ का जानो जिसमें खाज, जलन और कै तथा बुखार हो वह कफ पित्त का होता है अगर फोड़े के बीच में गड्ढा हो और फोड़े ऊँचे भी हों उनमें जलन और लाली हो कम पके प्यास और गफलत भी हो शरीर में कम्पन और दर्द हो बुखार में बड़बड़ाये तो वह सन्निपात यानी तीनों दोषों का होता है जिसे आराम नहीं होता यह ला-इलाज है।

जिस में फोड़े का रङ्ग चिरमरी जैसा हो उसमें से खून निकले और जलन हो वह खून का होता है।

६२ बसफोटिक के लिए

बांसा कुटकी चावल की खील जवासा दाख खम्भार छुहारा पटोल और नीम की छाल यह सब दवाइयाँ सम-भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर पिलाने से पित्त का बसफोटिक दूर हो जाता है।

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

९३ बसफोटिक

वांसा चिरायता बच खुरासानी तिरफला इन्दर जौ पास्त कड़ पटोल सब दवाइयाँ सम भाग लेकर इनका काढ़ा वनाकर इसमें शहद मिलाकर पिलाने से कफ का बसफोटिक दूर हो जाता है।

९४ बसफोटिक

वांसा चिरायता गिलोय पटोल नीम की छाल पित्त पापड़ा खेर सार यह सब दवाइयाँ सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर पिलाने से बुखार और हर प्रकार का बस-फोटिक दूर हो जाता है।

उपदंश

इस रोग में सबसे पहले रोगी को तेज जुलाब देना निहायत जरूरी और लाभदायक होता है इसके बाद दवा देनी चाहिए, जुलाब दिये बगैर बढ़िया से बढ़िया तथा लाभदायक दवा भी लाभ नहीं कर सकती।

९५ उपदंश के लिए

वांसा सहजना की छाल वरगद की छाल काहू की छाल यह सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पिलाने से एक सप्ताह में उपदंश को आराम हो जाता है।

९६ उपदंश

बांसा के पत्तों को पानी में उबाल कर फिर इस पानी से घावों को धोने से उपदंश यानी आतशक के घाव तथा हर प्रकार के घाव जल्द सूखकर अच्छे हो जाते हैं।

९७ उपदंश के लिए

बांसा की जड़ की छाल को गाय के घी में जलाकर इस घी को घावों पर लगाने से उपदंश के घाव बहुत जल्दी भर कर अच्छे हो जाते हैं।

९८ उपदंश के लिए

बांसा के पत्ते तथा जड़ दोनों सम भाग लेकर इन का काढ़ा बनाकर और इसमें थोड़ा शहद मिलाकर पिलाने से उपदंश का विषैला मादा खून से साफ़ होकर उपदंश का रोग गिनती के दिनों में जड़ से समूल नष्ट हो जाता है।

मसूरका शीतला-चेचक

यह रोग चौदह प्रकार का हुवा करता है(१)वात का (२) पित्त का (३) कफ का (४) खून का (५) सन्निपात यानी तीनों दोषों का (६) चरबी का इसी प्रकार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चमड़ा जिल्द आदि आदि का चौदह प्रकार का हुवा करता है।

जिस मसूरका की फुन्सियाँ काले रङ्ग की तथा रूखी हों और उनमें दर्द ज्यादा हो तथा सख्त हों तो वह मसूरका वात की कहलाती है।

जिसकी फुन्सियाँ लाल पीली या काली रंग की हों और उनमें जलन हो और दर्द भी ज्यादा हो जल्दी पक जावें तो वह पित्त की मसूरका कहलाती है।

जो सफेद रंग की बड़ी तथा चिकनी फुन्सियाँ हों और उनमें खुजली हो किन्तु दर्द कम हो, देर से पकें तो वह कफ की मसूरका कहलाती है।

जिसमें दस्त तथा पेचिश और बुखार भी हो और उसमें पित्त के आसार भी पाये जाएँ तो वह मसूरका खून की कहलाती है।

जिसमें फुन्सियाँ नीले रंग की हों और चप ी-सी हों तथा फैल जायें और उनमें खुजली भी चलती हो दर्द भी ज्यादा हो तथा पीप भी पड़ गया हो और देरी से पके और बहुत ज्यादा हो तो वह मसूरका सन्निपात यानी तीनों दोषों की कहलाती है।

अगर रोगी के गले में रोक हो जंभाई बहुत आवे ...जे तो उस रोगी की मसूरका का असर जिल्द में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पहुँच गया समझना चाहिये उसके इलाज में जल्दी और ज्यादा से ज्यादा कोशिश करनी चाहिये यह मसूरका खराब होती है।

ला-इलाज मसूरका

जो मसूरका सन्निपात यानी तीनों दोषों की हो और उसका रंग मूंग जामन खून तथा अलसी के फूल जैसा हो तो यह मसूरका ला-इलाज होती है।

६६ मसूरका के लिए

बांसा आमला खस कुटकी नीम की छाल पित्त पापड़ा पाठ पटोल लाल चन्दन सफेद चन्दन सब सम-भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर मिश्री मिलाकर पिलाने से पित्त की मसूरका तीन चार दिन में अच्छी हो जाता है।

१०० मसूरका

बांसा चिरोयता त्रिफला जवासा पटोल नीम की छाल सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर और उसमें शहद मिलाकर पिलाने से कफ की मसूरका अच्छी हो जाती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१०१ मसूरका

बांसा पाठ पटोल कुटकी लाल चन्दन सफेद चन्दन खस आमला और जवासा सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर उसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से हर प्रकार की मसूरका शीतला चेचक को तीन चार दिन में ही आराम हो जाता है।

१०२ शीतला

बांसा के पत्तों के रस में महव्वा मिलाकर पिलाने से इस रोग में बच्चों के लिये बड़ा लाभ होता है इसके पिलाने से शीतला का जोर दब जाता है और बच्चा इस रोग की झड़प से बचा रहता है।

१०३ शीतला का बुखार

बांसा चन्दन नागरमोथा गिलोय और मुनक्का सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर पिलाने से शीतला का बुखार दूर हो जाता है।

स्त्रियों का प्रदर रोग

यह रोग चार प्रकार का हुवा करता है जिनमें से [illegible] (२) पित का (३) कफ का (४) सन्निपात [illegible]ा करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्त्रियों की योनि से मासिक धर्म के दिनों के बगैर ही जब चाहे खून निकलने लगे और खून निकलने के समय दर्द हो तमाम शरीर में दर्द रहे इस को प्रदर का रोग कहते हैं।

जिसका यह खून रूखा हो और उसमें झाग हो और मांस के धोवन के पानी जैसा हो तो वह वात का प्रदर रोग कहलाता है।

जिस खून का रंग पीला हो तथा कुछ नीलापन भी हो तथा सफेद सफेद लाल रंग का हो और गरम हो शरीर में जलन हो तो वह पित्त का प्रदर कहलाता है।

जिस का गोंद जैसा चिकना और गुलाब के पानी जैसा रंग हो उसको कफ का प्रदर कहते हैं जिस का खून शहद घी या हड़ताल जैसे रंग का हो और उसमें मुरदा की सी बदबू आवे तो वह सन्निपात का प्रदर कहलाता है।

अगर यह खून बहुत ज्यादा गिरता हो तो इससे स्त्री निहायत कमज़ोर दुबली हो जाया करती है, बड़ा कष्ट होता और बेहोशी भी पैदा [illegible]

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तमाम शरीर का रंग पीला पड़ जाया करता है, प्यास की ज्यादती गफ़लत और अनेक प्रकार की खराबियाँ हो जाया करती है।

ला-इलाज प्रदर

अगर योनि से खून लगातार निकलता रहे और उसका निकलना बन्द ही न हो, प्यास ज्यादा लगे, शरीर में जलन तथा बुखार भी हो और कमजोर ज्यादा हो जाय तो ऐसा प्रदर का रोग ला-इलाज होता है।

१०४ प्रदर के लिए

बांसा, लाल चन्दन, आक के फूल, दारू, हल्दी, रसोत, चिरायता और नागरमोथा सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बना कर फिर इसमें शहद मिलाकर पिलाने से हर प्रकार का प्रदर का रोग एक सप्ताह में दूर हो जाता है।

१०५ योनि रोग

बाँसा, पत्र, पटोल पत्र, नीम के पत्ते, अमलतास के पत्ते, बच, खुरासानी सब चीजें सम भाग लेकर इनमें थोड़ा पानी डालकर आग पर रखकर उबाल लें फिर आग से उतार कर अच्छी तरह मसलकर कपड़े में से

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छानकर इस पानी से योनि को धोये, योनि की बदबू दूर हो जायगी तथा योनि की सब खराबियाँ भी दूर हो जाती हैं।

१०६ योनि-रोग

बांसा की जड़, आमला की जड़, कीकर की जड़, बेर की जड़ और माजूफल सब सम भाग लेकर इनमें थोड़ा-सा पानी डाल कर आग पर रखकर पकावें, जब अच्छी तरह उबाल आ जाय तो आग से नीचे उतार कर मसल कर कपड़े से छानलें, इस पानी से योनि को धोने से योनि की सब खराबियाँ दूर होकर ढीली और फैली हुई योनि भी ठीक होती है और योनि हर प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाती है।

गन्धपूतना बच्चों का रोग

जो बालक अपनी माता का दूध न पिये और उसको दस्त आते हों खाँसी, हुचकी, कै और बुखार हो, शरीर की रंगत तथा रौनक जाती रहे और उसके शरीर में से खून की सी गंध या बू आती हो तो गंध पूतना का रोग जानना चाहिये।

१०७ गंध पूतना के लिए

बांसा के पत्ते, नीम के पत्ते, कटेली के पत्ते, पटोल

जा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के पत्ते, कटेली के पत्ते और गिलोय, सब सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर कपड़छन करके इस पानी से बालक को नहलाने से यह रोग दूर हो जाता है।

१०८ गंध पूतना

बाँसा अरनी, कैथबल, सफेद अरण्ड और कूट समभाग लेकर इन सबका काढ़ा बनाकर कपड़े में से छान कर इस में बच्चों को नहलाने से मुख मण्डी तथा गंध पूतना आदि दोनों रोग दूर हो जाते हैं।

१०९ बच्चों की खाँसी

बांसा अतीस, नागर मोथ, छोटी पीपल, काकड़ा सीगीं सब सम भाग लेकर सबको बारीक कूट पीस कर कपड़छन करके उसमें शहद मिलाकर चटाने से बच्चों की हर प्रकार की खाँसी तथा श्वाँस दमा दूर हो जाता है।

११० बच्चों की कै हिचकी

बांसा, मुनक्का, पोस्त, हलीला, छोटी पीपल, सब चीजें सम भाग लेकर बारीक कूट पीसकर कपड़छन कर लें और उसमें शहद और घी मिलाकर चटाने से बच्चों की कैं तथा हिचकी को तत्काल आराम हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१११ प्रमेह के लिए

बांसा बीसपल, मजीठा, इन्द्र जौ, देव दुवार, तगर दायतूनी दोनों हल्दी, रासना, वायबड़ग, नागरमोथा, अरजन की छाल, सब दस दस पल अजवायन करीपा, चन्दन गुरिच और कुटकी सब आठ आठ पल इन सब दवाइयों को अधकुटा करके आठ दरून पानी में आग पर रखकर पकावें जब पकते-पकते पानी एक दरून के लग-भग बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर इस में धाय के फूल १०० पल शहद तीन तोला तिरकुटा दो पल तज दो पल, पत्रज, इलायची चार चार पल, पर्रेगू के फूल चार पल, नागकेसर दो पल, इन सबको बारीक कूट पीस कर चूरन-सा बनाकर उसमें डालदें फिर सब मिली हुई दवाइयों को घी के चिकने बरतन में डालकर बरतन का मुँह बन्द करके एक महीना तक रखा रहने दें, फिर कपड़े में से छानकर बोतलों में भर कर रखें, यह बाँसा अरिष्ट तैयार है, इस की मात्रा प्रति दिन सुबह के समय एक तोला से दो तोला तक लगातार पीने से कुछ ही दिनों में सख्त से सख्त और पुराने से पुराना प्रमेह भी दूर हो जाता है तथा वात रोग ग्रहणी बवासीर

जा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मूत्रकृच्छ्र हर प्रकार के दर्द तथा खून साफ होकर कोढ़ तक भी दूर हो जाता है।

११२ बांसा घृत

बाँसा, मुलहटी, चिरायता, तिरफला, खस, नीम की छाल, नागरमोथा, सरोन, कुटकी, रसोत, गुरिच, पीपल पदमाख, कचूर, इन्दरायन के फल, इन्द्र जौ, मुरब्बा अतीस सतावर, हल्दी सब दवाइयाँ ६-६ माशा लेकर और इनको अधकुटा करके आठगुना पानी में डाल कर आग पर रखकर पकावें साथ ही थोड़ा १ पाव घी भी उसमें डाल दें जब पकते-पकते सब पानी जल जाय और घी ही घी बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़े से छान लें और प्रतिदिन सुबह के समयं इसमें से एक तोला लगातार खिलाने से हर प्रकार का कोढ़ पागलपन बुखार पेट के मुद्दे गले की सूजन गण्डमाला और गले के सब रोग दूर हो जाते हैं।

११३ मस्सा बवासीर

वांसा, कसीस, मकरहारी, कूट, सोंठ, पीपल, सेंधा नमक, मैनसल कनेर, वाय वड़ङ्ग, जमाल गोटा, शुद्ध बन तोरई, चोक के बीज और हड़ताल सब १-१ कूरश भर लेकर इन सबका कलक बनाकर प्रस्थ भर तेल में

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पकावें और उसमें दो पल सैंड का दूध, दो पल आक का दूध और तेल से चौगुना गाय का पेशाब डालकर पकावें जब पकते-पकते सब पानी आदि जलकर तेल ही तेल बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़छन करके रखलें इस तेल को बवासीर के मस्सों पर प्रतिदिन लगातार लगाने से मस्से मुरझाकर सूखकर बिला कष्ट के झड़ जाते हैं और बवासीर का रोग सदा के लिए दूर हो जाता है।

११४ पांडु रोग के लिए

बांसा चिरायता तिरफला गुरिच कुटकी नीम की छाल समभाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर फिर उसमें शहद मिलाकर पिलाने से हर प्रकार का पांडु रोग से पैदा हुई सब ही खराबियाँ कुछ ही दिनों में दूर हो जाती हैं।

११५ सुजाक

बांसा की जड़ अरण्ड की जड़ मेवड़ी की जड़ गोखरू मुलहटी छोटी इलायची छोटी पीपल और पाषाण-भेद सब दवाइयाँ सम भाग लेकर इनका काढ़ा बनाकर शिलाजीत के साथ पिलाने से पेशाब के साथ रेत आना खून पीप तथा मवाद का आना बन्द होकर आठ दिन में

... जा...

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हर प्रकार के सुजाक को आराम हो जाता है और पेशाब खुलकर आने लगता है।

११६ प्रदर (लिकोरिया)

बांसा चिरायता दारू हल्दी रसोत नागर मोथा और भलावा शुद्ध सब दवाइयाँ सम भाग लेकर इन सबका काढ़ा बनाकर कपड़े में से छानकर ठण्डा करके उसमें शहद मिलाकर पिलाने से स्त्रियों का प्रदर का रोग हर प्रकार का गिनती के दिनों में बिल्कुल दूर हो जाता है।

११७ आँख रोग

बांसा सोंठ गुरिच हल्दी लाल चन्दन चैत चिरायता नीम की छाल कुटकी परवल तिरफला नागर मोथा जौ करीरया और इन्द्र जौ सम भाग लेकर इन सबका काढ़ा बनाकर पिलाने से आँखों की हर प्रकार की खराबियाँ तथा कमजोरियाँ दूर हो जाती हैं और उपदंश के कारण से बैठा हुवा गला भी खुल जाता है पीनस का रोग खाँसी श्वाँस दमा आदि दूर होकर कलेजे के अन्दर का पड़ा हुवा घाव भी अच्छा हो जाता है।

११८ तपेदिक के लिए

बांसा के पत्ते दो तोला का काढ़ा बनाकर कपड़छन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करके उसमें एक माशा छोटी पीपल का बारीक पिसा हुवा चूरन मिलाकर पिलाने से तपेदिक के रोगियों को तत्काल और बड़ा भारी लाभ होता है और कुछ दिन तक इसी प्रकार लगातार पिलाने से तपेदिक से पैदा हुई सब खराबियाँ तथा कमजोरियाँ आदि दूर होकर तपेदिक का रोग समूल नष्ट हो जाता है।

११६ तपेदिक

बांसा की जड़ दो तोला का काढ़ा बनाकर कपड़े में से छानकर उसमें एक माशा छोटी पीपल का बारीक चूरन मिलाकर पिलाने से भी वही लाभ होता है जो बांसा के पत्तों के काढ़े से होता है जिन रोगियों के कफ में खून जाता हो उसको भी यह बंद कर देता है और कुछ दिनों तक प्रति दिन लगातार पिलाने से पहले दरजे की तपेदिक की यकीनी तथा दूसरे दरजे तक की तपेदिक का आराम हो जाता है।

१२० तपेदिक मिरगी हिस्टिरय.

बांसा की जड़ के पत्ते डाली फूल आदि सब पंचांग लेकर उसका अधकुटा करके सरसों के तेल में डालकर आग पर रखकर पकावें, जब पकते-पकते बांसे का सब

जा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पंचांग जलकर राख हो जाय और केवल तेल ही तेल बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़े में से छानलें इस तेल की मालिश करने से तपेदिक, मिरगी हिस्ट्रीरिया और पागलपन रोग को बड़ा लाभ होता है जिसको चन्द दिनों तक प्रतिदिन लगातार मालिश करने से इन रोगों को बिल्कुल ही आराम हो जाता है बड़ी लाभदायक दवा है।

१२१ बिवाई रोग

बांसा के पत्तों का रस पांव पर लगाने से पाँव का फटना यानी बिवाई का रोग होना बन्द हो जाता है तथा फटा हुवा पैर यानी बिवाइयाँ कुछ बार लगाने से भर कर अच्छी हो जाती हैं।

१२२ पित्त रोग के लिए

बाँसा के पत्ते मुलहटी बेर की छाल चिरायता धनिया मुनक्का लाल चन्दन का चूरा नीलोफोर के फूल नागरमोथा कुटकी गिलोय ताजा आमला सूखा सुगन्ध वाला खस लोध पठानी इन्दर जौ मीठे शहतरा फसले की छाल कूला परींगों और जवासा सब दवाइयाँ एक-एक तोला लेकर सब को अधकुटा करके मिलाकर इसमें से

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आधा आधा छटाँक दवा को आधा सेर पानी में डाल कर आग पर रख कर पकावें। जब पकते-पकते पानी आधा पाव के लगभग बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर कपड़छन कर पिलाने से प्यास की ज्यादती, शरीर की जलन, मस्तिष्क की गरमी जिस से मनुष्य प्रलाप करने लग जाया करता है, यानी पागलपन और मुँह, नाक, पेशाब, पाखाना आदि के रास्तों से खूनका गिरना गफलत बेहोशी का हो जाना मुँह गला और होठों पर खुश्की रहना, कड़वी तथा पीले रंग की कै का होना तथा पित्त की खराबी में पैदा हुआ बुखार खाँसी आदि पित्त की खराबी से पैदा होने वाली सब खराबियाँ समूल नष्ट हो जाती है। पित्त रोग को दूर करने के लिये अचूक दवा हैं।

रक्त पित्त का रोग

इस रोग में मनुष्य के शरीर से किसी न किसी तथा सब रास्तों से खून निकलने लग जाया करता है। यह रोग धूप में ज्यादा चलने फिरने बैठने या आग के पास ज्यादा रहने से, ज्यादा व्यायाम तथा मेहनत आदि करने से, ज्यादा पैदल चलने से, किसी बात का बहुत ज्यादा रन्ज फिक्र तथा गम करने से, ज्यादा स्त्री प्रसंग भोग बिलास करने से, गरम तथा खुश्क चीजों के ज्यादा खाने पीने से यह रोग पैदा हो जाया करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जिनमें पहले पित्त खराब हो कर फिर यह खराब पित्त खून में मिलकर खून को खराब कर देता है जिससे खून शरीर के ऊपरी भागों से जैसे नाक, आँख, मुँह, कान आदि से और नीचे के भागों से जैसे पेशाब, पाखाना, इन्द्री तथा योनी आदि द्वारों से बहने लग जाता है या ऊपर तथा नीचे वाले सब ही भागों, रास्तों से निकलने लगता है।

जिस रक्त पित्त में कफ़ का भी मेल हुआ करता है उसका खून गाढ़ा चिकना भारी और कुछ सफेद सा हुआ करता है और वह खून शरीर के ऊपरी भागों यानी रास्तों से ही गिरा करता है और जिस रक्तपित्त में वात का मेल होता है उसका खून काला रूखा पतला लाल लाल झाग-दार हुवा करता है और यह शरीर के नीचे वाले भागों यानी रास्तों से गिरा करता है। केवल पित्त का खून काढ़े जैसा काला स्याह और गाय के पेशाब जैसा चिकना होता है जो धूवां की तरह रंग बदलता हुवा शरीर के ऊपरी तथा नीचे वाले दोनों रास्तों यानी शरीर के सब रास्तों से गिरता है।

१२३ रक्त पित्त के लिए

बांसा पत्र धनिया आमला मुनक्का और शाहतरा सब ६-६ माशा लेकर इनको तीन पाव ठण्डे पानी में रात के समय किसी मिट्टी के बरतन में डालकर भिगो कर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रखदें और सुबह के समय मसलकर कपड़े में से छानकर उसमें एक तोला मिश्री सफेद बारीक पीस कर मिला कर अच्छी तरह घोलकर पिला देने से हर प्रकार के रक्त पित्त से पैदा हुये बुखार जलन खुश्की प्यास की ज्यादती तथा खून का गिरना बन्द हो जाता है।

वात रक्त

इस रोग में नींद का कम आना या बिल्कुल ही न आना भूख का थक जाना माँस को गल गलकर गिरना सर में दर्द रहना कभी कभी बेहोशी भी हो जाना प्यास का ज्यादा लगना नजर का कमजोर हो जाना हिचकियाँ आना लंगड़ाकर चलना बुखार के बगैर ही शरीर का गरम रहना तथा बुखार सा मालूम देना जहाँ तहाँ फोड़े फुन्सी का निकलना तथा दाग धब्बे चकत्ते से पड़ जाना और उनका पकना शरीर में सुई चुभोना का सा दर्द होना उँगलियों का टेढ़ा हो जाना शरीर का कटना तथा उसमें जलन और खुजली होना जोड़ों और गाँठों में दर्द रहना तथा सूजन आ जाना आदि आदि खराबियाँ वात रक्त का रोग कहलाता है।

पसीना ज्यादा आना या बिल्कुल न आना शरीर का रंग काला पड़ जाना अगर कहीं घाव या फोड़ा हो तो उसमें बहुत जोर का दर्द होना शरीर के सब जोड़ों में दर्द रहना और फड़कना खुजली चलना जलन मालूम होना

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
खाल की रंगत का बिगड़ जाना आदि खराबियाँ नमकीन खट्टी खारी तीखी चिकनी और गरम चीजों के ज्यादा खाने पीने से या धूप में रखी हुई या सड़ी हुई मछलियाँ खाने से मूली कलथी उड़द की दाल ज्यादा खाने से मछली और दूध साथ खाने से सिरका या शराब आदि ज्यादा पीने से दिन में सोने और रात को जागने से हाथी घोड़ों की ज्यादा सवारी करने से ज्यादा पैदल चलने से पहले वात खराब होता है फिर यह खराब वात खून को खराब कर देता है जिससे अनेक प्रकार के रोग पैदा हो जाया करते हैं अगर वात रक्त में पित्त का दोष भी मिला हुवा हो तो शरीर में जलन बहुत ज्यादा हुवा करती है पसीना बहुत ज्यादा आता है शरीर में नशा सा भरा मालूम हुवा करता है प्यास ज्यादा लगती है शरीर पर हाथ रखना बहुत बुरा मालूम हुवा करता है पैर के तलवों में ऐसी जलन हुवा करती है कि पैर को जमीन पर रखने के लिये दिल नहीं चाहता है जिस वात रक्त में खून की भी खराबी हुवा करती है वह बहुत ही कष्टदायक हुवा करता है शरीर में खुजली होकर लाल लाल चकत्ते पड़ जाया करते हैं फोड़े और फुन्सियाँ भी ज्यादती के साथ निकला करती हैं और जल्द ही पक कर पीप देने लग जाया करते हैं शरीर में हर समय चुबक-सी मालूम हुवा करती है केवल वात ही की खराबी से पैदा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हुये, वात रक्त में शरीर में दुखावट-सी हुवा करती है और जहाँ तहाँ कड़काव रहा करता है शरीर में रूखी तथा काली सी सूजन आ जाया करती है जो कभी घटती तथा कभी बढ़ जाया करती है ठण्ड बहुत बुरी मालूम हुवा करती है, शरीर काँपने लग जाया करता है, पैरों में दर्द तथा सूजन हो जाया करती है।

१२४ वात रक्त के लिए

वांसा के पत्ते कुटकी बच दारू हल्दी गिलोय मजीठा पोस्त हलाला जर्द पोस्त बहेड़ा आमला सूखा और नीम की छाल सब ६-६ माशा लेकर सबको अधकुटा करके तीन पाव पानी में आग पर रखकर पकावें, जब पकते-पकते पानी तीन छटाँक के लगभग बाकी रह जाय तो आग से नीचे उतार कर मसल कर कपड़े में से छान लें फिर उसमें एक तोला शहद मिलाकर पिलाने से हर प्रकार की खाज खुजली फोड़े फुन्सी चकत्ते कोढ़ आदि तक कुछ ही दिनों के लगातार पिलाने से दूर हो जाते हैं।

१२५ खून को शुद्ध करने वाला

वांसा पत्र भांगरा देव दुवार खेरसार पाढ़ लाल चन्दन नसोत मजीठा नागरमोथा गिलोय हरी कुड़ा की छाल कूट मीठा सोंठ भारंगी कटेली छोटी का पंचांग बच नीम की छाल हल्दी दारू हल्दी पोस्त हलीला जर्द पोस्त बहेड़ा आमला सूखा पटोल पत्र मुरब्बा वायबड़ङ्ग बिज-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सार छाल पीता सतावर तरायमान छोटी पीपल इन्दर जौ बरना की छाल चिरायता बाबची अमलतास का गूदा सहोरे की छाल बकायन की छाल कुन्जे की गिरी अतीस नेत्रवाला इन्द्रायन की जड़ घमासा सारवा और शाहतरा सब चीजें १-१ तोला लेकर सबको मिलाकर कूट पीसकर बारीक करके रखें फिर उसमें से आग पर रखकर पकावें जब पानी पकते-पकते आधा पाव के लगभग रह जाय तो आग से नीचे उतार मसलकर छानलें और फिर उसमें एक तोला शहद मिलाकर पिलाया करें यह दवा खून को शुद्ध करने के लिये और अति लाभदायक दवा है खून को शुद्ध करने के लिये इससे अच्छी सस्ती और कोई दवा नहीं हो सकती जिस के कुछ दिन के पिलाने से ही हर प्रकार के कोढ़ तक दूर हो जाते हैं, नई तथा पुरानी से पुरानी उपदंशक वाद छाजन चम्बल खाज खुजली फोड़े फुन्सी का निकलना शरीर पर चकत्ते पड़ना किसी जगह का सुन हो जाना आदि वात रक्त से पैदा हुई हर प्रकार की खराबियाँ दूर हो जाती हैं।

१२६ कमलबाव के लिए

वाँसा पत्र गिलोय तिरफला कुटकी चिरायता और नीम की छाल सब ६-६ माशा लेकर और सब को कुचल कर आधा सेर पानी में आग पर रखकर पकावें जब पकते

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पकते पानी आधा पाव के लगभग रह जाय तो आग से नीचे उतार कर मसल कर छान लें फिर उसमें एक तोला शहद मिलाकर पिलावें इसी प्रकार लगातार प्रतिदिन पिलाने से गिनती के दिनों में कमलाबाय का वह रोग जिस में आँखों का रंग, शरीर का रंग, नाखूनों का रंग, मुँह आदि सारे शरीर का ही रंग तथा पेशाब पाखाने का रंग भी हल्दी जैसा पीला हरा या काला हो जाया करता है दूर हो जाता है।

काढ़े

काढ़े पाँच प्रकार के हुवा करते हैं–(१) रस (२) कलक (३) क्वाथ (४) हम और पाँच फाँट कहलाता है।

(१) किसी दवा को या बूटी को साथ लेकर बिना पानी मिलाये ही कूटकर उसका रस निकालना रस कहलाता है।

(२) अगर किसी सूखी दवा को दोचन्द पानी में चौबीस घण्टे भिगोकर फिर मसल कर छान लें तो यह भी रस कहलाता है किन्तु पहले रस से यह रस कम लाभदायक होता है।

(३) अगर किसी सूखी दवा या बूटी को आठ गुने पानी में डालकर फिर आग पर रखकर उबालकर जब पानी चौथाई रहजाय तो आग से उतार कर मसल छान-कर यह पानी भी रस कहलाता है किन्तु यह रस पहले

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तथा दूसरे हर दो रसों में कम लाभदायक हुवा करता है गीली दवा का रस भारी होता है और सूखी दवा रात को पानी में भिगोई हुई का रस हल्का हुवा करता है।

पुट पाक रस

गीली दवा को पीसकर उसकी टिकया बाँधकर उस पर अरण्ड बरगद तथा जामन का पका या गीला कपड़ा ही लपेट कर फिर उस के ऊपर गीली मिट्टी का दो अंगुल मोटा लेप करके फिर उसको आग या भूभल में रखकर पकावें। जब मिट्टी लाल हो जाय तब आग से निकाल कर मिट्टी को तोड़ कर उस दवा को निचोड़ कर उसका रस निकाल लें। इस रस को पुट पाक रस कहते हैं।

क्वाथ

एक भाग दवा में १६ भाग पानी मिट्टी के बरतन में डालकर आग पर रखकर पकावें जब पानी आठवां भाग बाकी रह जाय तब उतार कर छान लें यह क्वाथ कहलाता है।

क्वाथ कोढ़ में मिश्री या शहद

अगर रोग में वात की ज्यादती हो तो मिश्री थोड़ी वरना आठवां भाग मिश्री डाली जाती है और कफ की ज्यादती में सोलहवां भाग मिश्री डाली जाया करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फांट

कुटी हुई दवा पल भर १ कोढ़ू भर पानी लेकर मिट्टी के बरतन में गरम करके उतार कर फिर इस दवा को गरम पानी में डालकर ढक दें। जब ठण्डा हो जाय छान लें इस को फांट कहते हैं।

मन्थ फांट

दवाइयों से चौगुना पानी मिट्टी के बरतन में डाल कर खूब मथकर फिर उस पानी को छान लें यह मन्थ फांट है।

कलक की तरकीब

सूखी हुई दवा को पानी के साथ पीस कर लबदी बनालें इस को कलक कहते हैं इसकी मात्रा १ तोला तक है।

हम की तरकीब

कुटी हुई दवा को ६ गुना पानी में शाम को भिगोकर सुबह को मसल कर छान लें यह हम कहलाता है।

※ समाप्त ※

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पैसे पैसे के वैद्यक चुटकुले

यह पुस्तक नहीं, एक आश्चर्यजनक आविष्कार समझिए इसमें ऐसे २ रहस्यमय योग प्रकाश में लाये गए हैं, जो कि केवल एक पैसे की लागत में सर्व-प्राप्य वस्तुओं से सुगमता-पूर्वक मिनटों में बन जाते हैं, और सिर से पांव तक के रोगों पर अचूक रामबाण सिद्ध होते हैं। पहिले पहिले वैद्यों ने इन्हें व्यर्थ समझ कर हंसी उड़ाई थी, किन्तु परीक्षा करने पर उनके प्रभाव से चकित हो प्रशंसा की झड़ियां लगा रखी हैं। मोतिया बिन्द, चेचक का फोला दमा, निमोनिया, प्लीहा आदि कठिनतम रोगों का केवल १ पैसे में २ दिन में सफल इलाज! भला सोचिए कितने आश्चर्य-जनक चुटकुले हैं। मूल्य ४)

प्रतिदित सेरों दूध पचाओ

न व्यायाम करो, न कोई दवा खाओ

अनेक जीर्ण शीर्ण रोगी और दुबले मनुष्य मोटे ताजे बनने की इच्छा से विषैली औषधियों का सेवन करके और भी शरीर का सत्यानाश कर लेते हैं यदि वे एक बार हमारी 'दूध के गुण तथा उपयोग' पुस्तक पढ़ें, तो निस्सन्देह बिना व्यायाम या औषधि सेवन के ही वह सेरों दूध पचाकर अपूर्व शक्तिवान बन सकते हैं। इसमें ऐसी विधियां बताई गई हैं, जिनसे न्यूयार्क निवासी फिन्ट ने ७॥ सेर दूध प्रतिदिन पचाकर २२ सेर वज़न बढ़ा लिया था। दूध ही भूलोक का अमृत है, यदि आप उसका उपयोग करना जानलें। सैकड़ों रोगों की चिकित्सा केवल दूध सेवन द्वारा ही हो जाती है। इस पुस्तक में ये सभी उपयोगी बातें हैं। मूल्य केवल १॥) रुपया डाक व्यय ॥|-) पृथक।

घृत के गुण तथा उपयोग

घृत अत्यन्त पौष्टिक पदार्थ है और अनेक रोगों को समूल नष्ट करने के लिए लाभप्रद औषधिवत् भी है, किन्तु तभी जबकि उसे उचित ढंग से सेवन किया जाय यह पुस्तक आपको घृत सेवन करने की ऐसी ऐसी उत्तम विधियाँ बताएगी, जिनके अनुसार आपके शरीर में अत्यधिक रक्त उत्पन्न होकर चेहरा अंगारे की भाँति दमदमा उठेगा, शरीर पुष्ट और शक्तिशाली हो जायगा, और कठिन से कठिन रोग भी नितान्त निमूंल हो जायेंगे। मूल्य १) रु०

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यौवन की बहार

अर्थात्—यौवन रक्षक ज्ञान-कोष

लुटी हुई जवानी के पतझड़ में पुनः यौवन की बहार लाने वाले अनमोल रहस्य।

पुस्तक क्या है एक ईश्वरीय देन है। सैकड़ों रुपये की औषधियां खाकर भी नपुन्सकता के जो रोगी निराश ही रहे, हमारी पुस्तक 'यौवन की बहार पढ़कर ही पुनः अपनी खोई हुई जवानी को पा गए। इसमें यौवन की रक्षा करने के अनूठे उपाय, पुरुषत्वशक्ति को बढ़ाने के उपाय, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, प्रमेह और धातुक्षीणता जैसे भयंकर रोगों को बिना औषधि सेवन किए ही नष्ट करने के अद्भुत उपाय अंकित हैं। वृद्धावस्था में भी युवक बनाये रखने वाली यह अनुपम पुस्तक आपको ऐसे भेद बताएगी, जिनसे केवल एक साधारण फल सेवन करने से एक नितांत नामर्द भी मर्द बन सकता है।

यदि आप खोये हुए यौवन से पूर्ण निराश हो चुके हैं, तो एक बार यह पुस्तक पढ़ें। और यदि आपको इसके पढ़ने से मुँह मांगा वरदान प्राप्त हो जाए, तो अपने अन्य निराश भाइयों का कल्याण कीजिये। मूल्य केवल ४) रुपए, डाक व्यय ॥।≡) पृथक।

संन्यासियों की गुप्त बूटियां

देहाती जड़ी बूटियां (प्रथम भाग)

इस पुस्तक में असंख्य ऐसी जड़ी बूटियों के गुप्त भेद अंकित हैं, जिनके बल पर सन्यासियों की धाक जमी है। वे बूटियां जो जंगलों, सड़कों और गांवों में हर समय मिल सकती है। बड़े २ रोगों पर चमत्कारी प्रभाव दिखाती हैं। किन्तु आप उनके गुणों से अपरिचित हैं। यह अद्वितीय पुस्तक यदि आपके घर होगी, तो घर की स्त्रियां भी बच्चों व पुरुषों के अनेक रोगों की तत्क्षण चिकित्सा कर सकती हैं। कान में लगा कर सर्प बिष दूर करने, मधुमेह को समूल मिटाने, दुबले शरीर को मोटा करने, ७ दिन में नपुन्सकता दूर करने,

(अगले पृष्ठ पर पढ़िये)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बांझ को पुत्र देने, और अंगुली लगाते ही ज्वर को उतारने वाली ऐसी बूटियां बताई गई हैं, जिनके चमत्कारी प्रभाव से लोग आपको धन्वन्तरी का अवतार समझने लगेंगे। मूल्य केवल ५) रुपये डाक व्यय १)।

देहाती जड़ी बूटियां (द्वितीय भाग)

जिन्होंने प्रथम भाग पढ़ा है, वे जानते हैं, कि भारत के विभिन्न प्रांतों में उगने वाली अपूर्व बूटियों का हमने कितने परिश्रम से ज्ञान संग्रह किया है। किस प्रान्त में कौन २ बूटियाँ कहाँ २ पाई जाती हैं, उनके प्रान्तीय तथा वैद्यक नाम क्या हैं। और किन २ रोगों पर वे चमत्कारी लाभ दिखाती हैं, आदि ऐसी बातें लिखी गई हैं, जो जनता के लिये अनमोल भेंट सिद्ध होंगी—उदाहरणतया—उन्माद रोगी की नींद जानने वाली बूटी, घाव और कुचले अंग को ठीक करने वाली बूटी, हाथ में लेकर बिच्छू पकड़ लो और वह डंक न मारे, लड़की के बजाय शर्तिया लड़का पैदा करने वाली बूटी, अन्धे नेत्रों को ज्योति देने वाली क्षय व तिल्ली नाशक बूटियां, सन्तानदाता बूटी, गर्भ-पात प्रदर, स्वप्नदोष रोकने की बूटी, सूखा रोग की ताबीज बूटी, पेट शव को ५ मिनट में शांत करने वाली बूटी, ऐसी बूटी जिसे चिलम में रखकर पीने मात्र से बवासीर मिट जाय, आदि २ आश्चर्यजनक बूटियों के विशद वर्णन पढ़कर आप दग रह जायंगे और समय २ पर गांवों और खेतों आदि से लेकर ही अद्भुत लाभ उठा सकेंगे। मूल्य ४॥) रुपए, डाक व्यय ॥≡)

मधु (शहद) के गुण तथा उपयोग

अधिकांश औषधियां शहद के साथ ही सेवन कराई जाती हैं, अतः आप सहज ही अनुमान लगा सकते हैं, कि इसमें परम लाभकारी गुण अवश्य ही विद्यमान हैं। चिकित्सा शास्त्रों के अनुसार पाँच अमृतों में से एक अमृत मधु भी है। इस पुस्तक में अर्धांग, लकवा, मोतियाबिन्दु, घाव, फोड़े, दमा, ज्वर कुष्ठ, उपदंश, प्रमेह, तपेदिक (टी० बी०) आदि रोगों के लिये ऐसे विश्वस्त योग लिखे गये हैं, जिनकी तुलना करना कठिन है। एक जर्मन तिला का योग तो पुस्तक की जान है। मधु से १० मिनट में सिंगरफ की भस्म बनाने वाला योग भी लिख दिया है। मूल्य २।) सवा दो रु० डाक व्यय ॥।) पृथक

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार देहली ६।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देहाती फार्मेसी की पुस्तकें

देहाती अनुभूत योग संग्रह नं० १

,, ,, ,, नं० २

,, प्राकृतिक चिकित्सा

सन्यासी चिकित्सा शास्त्र

पैसे २ के चुटकुले

पलांडू (प्याज़) के गुण तथा उपयोग

आक ,, ,, ,, ,,

दूध ,, ,, ,, ,,

घृत ,, ,, ,, ,,

रीठा (अरिष्ठिक) ,, ,, ,,

मधू (शहद) ,, ,, ,,

नमक ,, ,, ,,

धतूरा ,, ,, ,,

निम्बू ,, ,, ,,

मिर्च ,, ,, ,,

तुलसी ,, ,, ,,

सौंफ़ ,, ,, ,,

फिटकरी ,, ,, ,,

आम ,, ,, ,,

बबूल—नीम—इन्द्रायण (गडूंबा)

डाक खर्च के लिये चार आने के टिकट भेज कर बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगाइये

पता:—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, देहली ६.